CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2024 with Solution PDF-Set 2/3/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. सुचारित्र्य के दो सशक्त स्तम्भ हैं – प्रथम - सुसंस्कार और द्वितीय - सत्संगति। सुसंस्कार जीवन की सत्संगति व सत्कर्मों की अर्जित संपत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है। जिस प्रकार कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है, ठीक उसी प्रकार कुमार्गी का कालुष्य सत्संगति से स्वर्णिम आभा में परिवर्तित हो जाता है। सतत सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कर्मों के लिए प्रेरित करते हैं। परिणामत: सुचरित्र का निर्माण होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है – "महाकवि टैगोर के पास बैठने मात्र से ऐसा प्रतीत होता था मानो भीतर का देवता जाग गया हो।"

वस्तुत: चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है। चरित्रवान व्यक्ति ही समाज की शोभा है, शक्ति है। सुचारित्र्य से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी सुवासित होता है और इस सुवास से राष्ट्र यशस्वी बनता है। विदुर जी की उक्ति अक्षरश: सत्य है कि सुचरित्र के बीज हमें भले ही वंश परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं पर चरित्र-निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है। आनुवंशिक परंपरा, परिवेश और परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकते हैं पर उसका अर्जन नहीं कर सकते; वह व्यक्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं होता। व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक है। अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक परिवार, अनेक परिवारों से एक कुल, अनेक कुलों से एक जाति या समाज और अनेकानेक जातियों और समाज-समुदायों से मिलकर ही एक राष्ट्र बनता है। आज जब लोग राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की बात करते हैं, तब वे स्वयं उस राष्ट्र के आचरक घटक हैं – इस बात को विस्मृत कर देते हैं। [10 अंक]

1(i). "सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है।" पंक्ति में रेखांकित पद का आशय हो सकता है : [1 अंक]

(A) विलक्षण विचार

(B) विलक्षण वैभव

(C) विलक्षण भाव

(D) विलक्षण विवेक

सही उत्तर: (B) विलक्षण वैभव

हल:

अवधारणा:

- शब्दार्थ को प्रसंग से जोड़ना।
- विकल्प का निर्णय गद्यांश के कथन और पूछे गए संदर्भ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: संदर्भ पहचानें विभूति का अर्थ वैभव या विशिष्ट संपदा है। दुर्लभ उस वस्तु को कहते हैं जो आसानी से प्राप्त नहीं होती। यहाँ अच्छी संगति को जीवन की अनमोल संपदा कहा गया है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें गद्यांश में सुसंस्कार को अर्जित संपत्ति तथा सत्संगति को दुर्लभ विभूति बताया गया है। दोनों पद संपदा के अर्थ को स्पष्ट करते हैं। इसीलिए विलक्षण वैभव उपयुक्त है। विचार, भाव और विवेक संगति से उत्पन्न हो सकते हैं, किंतु वे विभूति शब्द के सीधे पर्याय नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — विलक्षण वैभव।

त्वरित सुझाव: विभूति के पास आए संपत्ति शब्द से अर्थ का संकेत लेकर वैभव वाला विकल्प चुनें।

1(ii). सुचारित्र्य के सशक्त स्तम्भ हैं : [1 अंक]

(A) संपत्ति और सुसंस्कार

(B) सत्संगति और आनुवंशिकता

(C) सुसंस्कार और परिवेश

(D) सुसंस्कार और सत्संगति

सही उत्तर: (D) सुसंस्कार और सत्संगति

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश की प्रत्यक्ष सूचना पहचानना।
- विकल्प का निर्णय गद्यांश के कथन और पूछे गए संदर्भ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: संदर्भ पहचानें लेखक ने आरंभ में ही सुचारित्र्य के दो आधार बताए हैं। उत्तर देने के लिए अपनी सामान्य धारणा के बजाय उन्हीं दोनों आधारों को साथ पहचानना आवश्यक है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें पहली पंक्ति में प्रथम आधार सुसंस्कार तथा द्वितीय आधार सत्संगति है। अतः दोनों का युग्म सही है। संपत्ति को स्वतंत्र स्तंभ नहीं कहा गया; आनुवंशिकता और परिवेश को बाद में केवल प्रेरणा का साधन बताया गया है। इसलिए (A), (B) और (C) में दिया प्रत्येक युग्म अधूरा या भिन्न है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — सुसंस्कार और सत्संगति।

त्वरित सुझाव: दो स्तंभ पूछे जाने पर पहली पंक्ति के प्रथम और द्वितीय पद मिलाकर विकल्प जाँचें।

1(iii). संदर्भ के अनुसार गद्यांश में 'कालुष्य' शब्द का सटीक अर्थ क्या हो सकता है ? [1 अंक]

(A) दोष

(B) कालिमा

(C) लघुता

(D) प्रभास

सही उत्तर: (B) कालिमा

हल:

अवधारणा:

- प्रसंगानुकूल शब्दार्थ का निर्णय।
- विकल्प का निर्णय गद्यांश के कथन और पूछे गए संदर्भ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: संदर्भ पहचानें कालुष्य का संबंध मलिनता, कलुष या कालिमा से है। यहाँ कुधातु की कालिख और कुमार्गी के कालुष्य की तुलना की गई है, इसलिए उसी बिंब से अर्थ निश्चित होगा।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें पारस कुधातु की कालिख को स्वर्णिम आभा में बदल देता है; उसी तरह सत्संगति मनुष्य की नैतिक कालिमा दूर करती है। दोष व्यापक अर्थ में निकट है, पर दिए गए कालिख और स्वर्णिम आभा के संदर्भ में कालिमा अधिक सटीक है। लघुता छोटेपन को और प्रभास चमक को कहते हैं; ये अपेक्षित अर्थ नहीं देते।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — कालिमा।

त्वरित सुझाव: कालुष्य का अर्थ चुनते समय उसके समानांतर आए कालिख और उसके विपरीत स्वर्णिम आभा को देखें।

1(iv). गद्यांश के अनुसार सतत सत्संगति से क्या प्राप्त होता है ? [1 अंक]

(A) निर्माण को नई दिशा

(B) भ्रमण करने का मार्ग

(C) विचारों को नई दिशा

(D) विचरण करने का मार्ग

सही उत्तर: (C) विचारों को नई दिशा

हल:

अवधारणा:

- कारण और उसके प्रत्यक्ष परिणाम को पहचानना।
- विकल्प का निर्णय गद्यांश के कथन और पूछे गए संदर्भ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: संदर्भ पहचानें प्रश्न सतत सत्संगति का सीधा परिणाम पूछता है। गद्यांश में सत्संगति, विचार, अच्छे कर्म और सुचरित्र के निर्माण की क्रमिक कड़ी दी गई है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें लेखक स्पष्ट कहता है कि सतत सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है। अच्छे विचार आगे अच्छे कर्मों की प्रेरणा बनते हैं। निर्माण अंतिम परिणाम है, इसलिए (A) सीधा कथन नहीं है। भ्रमण तथा विचरण यात्रा से जुड़े शब्द हैं; गद्यांश में उनके मार्ग की चर्चा नहीं है, इसलिए (B) और (D) भी गलत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — विचारों को नई दिशा।

त्वरित सुझाव: सत्संगति के तुरंत बाद लिखा परिणाम चुनें; बाद में आने वाले चरित्र निर्माण को उससे न मिलाएँ।

1(ix). आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथन के माध्यम से लेखक ने उल्लेख किया है : [1 अंक]

(A) सत्संगति के प्रभाव को

(B) हजारी प्रसाद की उदारता को

(C) महाकवि टैगोर की दिव्यता को

(D) चरित्र निर्माण के प्रयासों को

सही उत्तर: (A) सत्संगति के प्रभाव को

हल:

अवधारणा:

- उदाहरण के माध्यम से लेखक का उद्देश्य समझना।
- विकल्प का निर्णय गद्यांश के कथन और पूछे गए संदर्भ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: संदर्भ पहचानें किसी कथन का आशय समझने के लिए उसके पहले और बाद का विचार देखना चाहिए। यहाँ टैगोर के पास बैठने का अनुभव अच्छी संगति की परिवर्तनकारी शक्ति का उदाहरण है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें द्विवेदी जी के अनुसार टैगोर के पास बैठने मात्र से भीतर का देवता जाग उठता था। यह संगति से मनुष्य के अच्छे गुण जागने की बात है। उदारता का प्रसंग नहीं है, इसलिए (B) गलत है। टैगोर की दिव्यता का आभास उदाहरण में है, पर लेखक का व्यापक उद्देश्य (C) नहीं है। (D) के व्यक्तिगत प्रयास भी इस कथन का मुख्य विषय नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है — सत्संगति के प्रभाव को।

त्वरित सुझाव: किसी व्यक्ति का उदाहरण देखकर केवल उसका गुण न चुनें; देखें उदाहरण किस मुख्य विचार को सिद्ध करता है।

1(v). गद्यांश में 'भीतर का देवता' कथन किस बात की ओर संकेत करता है ? [1 अंक]

(A) ईश्वर का आभास

(B) दिव्यगुणों का आभास

(C) सत्य का आभास

(D) परिवेश का आभास

सही उत्तर: (B) दिव्यगुणों का आभास

हल:

अवधारणा:

- रूपक के सांकेतिक अर्थ को पहचानना।
- विकल्प का निर्णय गद्यांश के कथन और पूछे गए संदर्भ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: संदर्भ पहचानें भीतर का देवता एक रूपक है। इसका तात्पर्य व्यक्ति के अंत:करण में विद्यमान श्रेष्ठता और सद्गुणों से है, जो सत्संगति के प्रभाव से जागते हैं।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें टैगोर के पास बैठने से द्विवेदी जी को अपने भीतर श्रेष्ठ गुणों के जागने का अनुभव होता था। इसलिए यहाँ दिव्यगुणों का आभास उपयुक्त है। ईश्वर का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं बताया गया, अत: (A) शाब्दिक अर्थ तक सीमित है। सत्य एक गुण हो सकता है, पर (C) पूरे संकेत को नहीं समेटता। परिवेश बाहरी परिस्थिति है; (D) भीतर के जागरण का अर्थ नहीं देता।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — दिव्यगुणों का आभास।

त्वरित सुझाव: भीतर का देवता पढ़कर रूपक को अंत:करण के श्रेष्ठ गुणों में बदलें, फिर उपयुक्त विकल्प चुनें।

1(vi). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I : शिथिल चरित्र से ही जीवन सार्थक है।

कथन II : शिथिल चरित्र से ही राष्ट्र निर्माण संभव है।

कथन III : आनुवंशिक परंपरा से ही चरित्र अर्जन संभव है।

कथन IV : उदात्त चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है।

गद्यांश के अनुसार उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल कथन I सही है।

(B) केवल कथन II और III सही हैं।

(C) केवल कथन IV सही है।

(D) केवल कथन II सही है।

सही उत्तर: (C) केवल कथन IV सही है।

हल:

अवधारणा:

- कथनों की गद्यांश से तुलना।
- विकल्प का निर्णय गद्यांश के कथन और पूछे गए संदर्भ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: संदर्भ पहचानें कथन की सत्यता जाँचते समय सुचरित्र और शिथिल चरित्र का अंतर ध्यान में रखना चाहिए। गद्यांश जीवन की सार्थकता को श्रेष्ठ चरित्र से जोड़ता है, वंश के अधिकार से नहीं।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें कथन I और II गलत हैं, क्योंकि शिथिल चरित्र जीवन को सार्थक बनाने के बजाय राष्ट्र के लिए संकट

उत्पन्न करता है। कथन III भी गलत है: परंपरा चरित्र के बीज या प्रेरणा दे सकती है, किंतु उसका अर्जन व्यक्ति स्वयं करता है। कथन IV उदात्त चरित्र को जीवन की सार्थकता का आधार बताता है, जो लेखक की बात से मेल खाता है। इसलिए (A), (B) और (D) में असत्य कथन शामिल हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — केवल कथन IV सही है।

त्वरित सुझाव: पहले शिथिल और उदात्त का विरोध पहचानें, फिर आनुवंशिक प्रेरणा और व्यक्तिगत अर्जन में भेद करें।

1(vii). 'कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है।' इस उदाहरण के मूल भाव को व्यक्त करने वाली कहावत है : [1 अंक]

(A) परहित सरिस धर्म नहीं भाई

(B) बिनु सत्संग विवेक न होई

(C) सठ सुधरहिं सतसंगति पाई

(D) जहाँ सुमति तहँ संपत्ति नाना

सही उत्तर: (C) सठ सुधरहिं सतसंगति पाई

हल:

अवधारणा:

- दृष्टांत और कहावत का भाव मिलाना।
- विकल्प का निर्णय गद्यांश के कथन और पूछे गए संदर्भ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: संदर्भ पहचानें पारस के स्पर्श से कुधातु के बदलने का दृष्टांत बुरी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के सत्संगति से सुधरने को स्पष्ट करता है। कहावत में भी यही सुधार और उसका कारण होना चाहिए।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें सठ सुधरहिं सतसंगति पाई का अर्थ है कि दुष्ट व्यक्ति भी अच्छी संगति पाकर सुधर जाते हैं। यह कुमार्गी के कालुष्य के बदलने से सीधे मेल खाता है। (A) परोपकार का महत्व बताता है। (B) सत्संग से विवेक मिलने की बात करता है, पर दुष्ट के सुधार को सीधे नहीं कहता। (D) सद्बुद्धि और संपत्ति का संबंध बताता है। इसलिए वे इस दृष्टांत का सबसे सटीक भाव नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — सठ सुधरहिं सतसंगति पाई।

त्वरित सुझाव: दृष्टांत में किसका क्या परिवर्तन हुआ, यह पहचानें; यहाँ कुमार्गी का सुधार कहावत का निर्णायक संकेत है।

1(viii). विदुर जी की उक्ति के संदर्भ में क्या सत्य नहीं है ? [1 अंक]

(A) सुचरित्र के बीज परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं।

(B) चरित्र निर्माण व्यक्ति के स्वयं के प्रयासों पर निर्भर है।

(C) परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकती है।

(D) चरित्र निर्माण संगति से होता है।

सही उत्तर: (D) चरित्र निर्माण संगति से होता है।

हल:

अवधारणा:

- निर्दिष्ट उक्ति और व्यापक गद्यांश में भेद करना।
- विकल्प का निर्णय गद्यांश के कथन और पूछे गए संदर्भ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: संदर्भ पहचानें यह प्रश्न विदुर जी की उक्ति के संदर्भ में असंगत कथन चुनने को कहता है। पूरी रचना में सत्संगति का महत्व है, पर उक्ति का केंद्र व्यक्ति का अपना प्रयास है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें उक्ति के अनुसार सुचरित्र के बीज वंश परंपरा से मिल सकते हैं, निर्माण अपने बलबूते होता है और परिस्थिति केवल प्रेरणा देती है। इसलिए (A), (B) और (C) उसी उक्ति के अनुरूप हैं। संगति से निर्माण वाला (D) सामान्य गद्यांश के विचार से जुड़ा है, किंतु विदुर जी की इस उक्ति का कथन नहीं है; निर्दिष्ट संदर्भ में यही अपेक्षित असत्य विकल्प है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — चरित्र निर्माण संगति से होता है।

त्वरित सुझाव: नहीं और विदुर जी की उक्ति को रेखांकित करके केवल उसी अंश से चारों विकल्पों का मिलान करें।

1(x). शिथिल चरित्र सम्पूर्ण राष्ट्र को कैसे प्रभावित करता है ? [1 अंक]

(A) राष्ट्र शिथिल हो जाता है

(B) राष्ट्र का विकास रुक जाता है

(C) राष्ट्र का उत्थान करता है

(D) राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है

सही उत्तर: (D) राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है

हल:

अवधारणा:

- व्यक्ति राष्ट्र का एक घटक है; इसलिए उसके आचरण का प्रभाव सामूहिक चरित्र पर पड़ता है।
- उत्तर के लिए गद्यांश में बताए गए सीधे परिणाम को चुनना चाहिए, अपनी ओर से आर्थिक या राजनीतिक निष्कर्ष नहीं जोड़ना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का प्रत्यक्ष प्रमाण गद्यांश स्पष्ट कहता है कि व्यक्ति-विशेष का चरित्र शिथिल होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है। अनेक व्यक्ति परिवार, समाज और अंततः राष्ट्र का निर्माण करते हैं। इसलिए व्यक्ति का नैतिक पतन केवल उसका निजी विषय नहीं रहता।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) राष्ट्र के शिथिल होने की सामान्य बात कहता है, जबकि पाठ विशेष रूप से चरित्र संकट का उल्लेख करता है। (B) विकास रुकने का परिणाम गद्यांश में नहीं दिया गया है। (C) उत्थान का दावा करता है, जो चरित्र के पतन से विपरीत है। (D) पाठ का स्पष्ट कथन है।

चरण 3: निष्कर्ष शिथिल चरित्र से राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: व्यक्ति के चरित्र का परिणाम पूछने पर गद्यांश में आए चरित्र संकट पद से विकल्प मिलाएँ।

---

2. मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरु नंदन-कानन का फूल बने ?
काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने ?
मैं कब कहता हूँ मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले ?
मैं कब कहता हूँ प्यार करूँ तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले ?
मैं कब कहता हूँ विजय करूँ मेरा ऊँचा प्रासाद बने ?
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुँधली-सी याद बने ?
पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे ?
नेतृत्व न मेरा छिन जावे क्यों इसकी हो परवाह मुझे ?
मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मेरी मिट्टी जनपद की धूल बने –
फिर उस धूली का कण-कण भी मेरा गति-रोधक शूल बने ! [5 अंक]

2(i). मैं कब कहता हूँ – पंक्ति में 'कब' क्या इंगित करता है ? [1 अंक]

(A) सदैव निराकांक्षी
(B) सदैव आकांक्षी
(C) सदैव अभिलाषी
(D) सदैव अस्थिर

सही उत्तर: (A) सदैव निराकांक्षी

हल:

अवधारणा:

- कविता में प्रश्नवाचक रूप कई बार किसी अपेक्षा का निषेध करता है।
- बार-बार आया मैं कब कहता हूँ कवि की निजी सुविधाओं के प्रति निराकांक्षा व्यक्त करता है।

चरण 1: कथन का भाव समझना कवि पूछता है कि उसने कब संसार को अपने अनुकूल होने या जीवन को सुखों का उद्यान बनने को कहा है। यहाँ किसी समय की जानकारी नहीं माँगी गई है। आशय है कि कवि ऐसी माँग करता ही नहीं; वह संघर्ष से बचाने वाले विशेष अनुग्रह की अपेक्षा नहीं रखता।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण इसलिए (A) सदैव निराकांक्षी प्रसंगानुकूल है। (B) सदैव आकांक्षी और (C) सदैव अभिलाषी अपेक्षाएँ रखने का भाव देते हैं, जबकि कवि उनका निषेध करता है। (D) सदैव अस्थिर भी गलत है, क्योंकि बाधाएँ स्वीकार करने में कवि का निश्चय दृढ़ है।

चरण 3: निष्कर्ष कब का प्रयोग कवि के सदैव निराकांक्षी होने को इंगित करता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: मैं कब कहता हूँ को मैं ऐसी माँग नहीं करता में बदलकर कविता का निषेधात्मक भाव पहचानें।

2(ii). संसार के विषय में कवि का क्या विचार है ? [1 अंक]

(A) संसार उसकी गति से चले

(B) संसार तीव्र गति से चले

(C) संसार धीमी गति से चले

(D) संसार अपनी गति से चले

सही उत्तर: (D) संसार अपनी गति से चले

हल:

अवधारणा:

- कवि संसार से अपने लिए विशेष अनुकूलता की माँग नहीं करता।
- संसार की गति को स्वीकार करने का अर्थ उसे निजी इच्छाओं के अनुसार न मोड़ना है।

चरण 1: पहली पंक्ति से आशय निकालना कवि कहता है कि वह जग को अपनी दुर्धर गति के अनुकूल बनने के लिए नहीं कहता। इससे उसकी दृष्टि स्पष्ट होती है: संसार अपने ढंग से चलता रहे और वह उसके बीच अपना संघर्ष जारी रखे। उसे अपनी सुविधा के लिए संसार की दिशा या चाल बदलवाने की इच्छा नहीं है।

चरण 2: चारों विकल्प परखना (A) संसार को कवि की गति से चलाने की बात करता है, जिसका पहली पंक्ति में निषेध है। (B) तीव्र और (C) धीमी गति की कोई माँग कविता में नहीं है। (D) संसार अपनी गति से चले, कवि की निजी अनुकूलता की अपेक्षा न रखने वाली दृष्टि से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के अनुसार संसार अपनी गति से चले। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहली पंक्ति में मेरी गति के अनुकूल का निषेध देखकर संसार की स्वतंत्र गति वाला विकल्प चुनें।

2(iii). "वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने" से कवि का तात्पर्य है : [1 अंक]

(A) जीवन से विपत्तियों का समाप्त हो जाना

(B) काँटों का फूलों की शरण में चले जाना

(C) विपत्तियों का सुखद परिस्थितियों में ढल जाना

(D) काँटे का कोमल फूल के रूप में बदल जाना

सही उत्तर: (C) विपत्तियों का सुखद परिस्थितियों में ढल जाना

हल:

अवधारणा:

- काँटा जीवन की कठिनाइयों और फूल सुखद परिस्थितियों का बिंब है।
- तात्पर्य पूछे जाने पर केवल शब्दों का प्रत्यक्ष अर्थ नहीं, कविता का व्यापक भाव चुनना चाहिए।

चरण 1: काँटे और फूल का संकेत समझना कवि काँटे की कठोरता और तीखेपन को उसकी मर्यादा मानता है। वह नहीं चाहता कि काँटा अपना स्वभाव छोड़कर फूल बन जाए। जीवन के संदर्भ में इसका आशय है कि वह विपत्तियों को अपने लिए सुखद परिस्थितियों में बदलने की माँग नहीं करता।

चरण 2: शाब्दिक और भावगत विकल्प अलग करना (C) विपत्तियों का सुखद परिस्थितियों में ढल जाना बिंब का भावार्थ बताता है। (D) काँटे का फूल बनना केवल प्रत्यक्ष चित्र दोहराता है। (A) विपत्तियों की समाप्ति कहता है, जबकि यहाँ उनके स्वरूप-परिवर्तन का संकेत है। (B) फूलों की शरण में जाने की बात कविता में नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का तात्पर्य विपत्तियों का सुखद परिस्थितियों में ढल जाना है; कवि ऐसी माँग नहीं करता। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: तात्पर्य पूछने पर काँटे को विपत्ति और फूल को सुख की स्थिति मानकर भावार्थ वाला विकल्प जाँचें।

2(iv). कवि के अनुसार जीवन की सार्थकता क्या है ? [1 अंक]

(A) संघर्ष एवं दुखों से लड़ने में

(B) सुख एवं सुविधाजनक स्थिति में

(C) परस्पर ईर्ष्या-द्वेष में

(D) शक्ति प्रदर्शन एवं नेतृत्व में

सही उत्तर: (A) संघर्ष एवं दुखों से लड़ने में

हल:

अवधारणा:

- कविता में जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार करने और निरंतर आगे बढ़ने का संकल्प है।
- जीवन की सार्थकता निजी सुख, यश या नेतृत्व की रक्षा से नहीं, संघर्षशील कर्म से जुड़ती है।

चरण 1: कवि की स्वीकार-भावना देखना कवि युद्ध की चोटों से बचने की माँग नहीं करता। वह अपना पथ सदा प्रशस्त रहने या नेतृत्व न छिनने की चिंता भी नहीं पालता। अंतिम पंक्तियों में वह अपनी धूल के भी गति रोकने वाले शूल बन जाने तक की स्थिति के लिए प्रस्तुत है। इससे बाधाओं का सामना करने की दृढ़ता प्रकट होती है।

चरण 2: विकल्पों को संदेश से जोड़ना (A) संघर्ष एवं दुखों से लड़ना इसी दृढ़ता को व्यक्त करता है। (B) सुख-सुविधा की चाह कविता के निषेध के विपरीत है। (C) ईर्ष्या-द्वेष का समर्थन कहीं नहीं है। (D) शक्ति-प्रदर्शन और नेतृत्व का मोह भी अनुचित है, क्योंकि कवि नेतृत्व छिनने की परवाह नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन की सार्थकता संघर्ष एवं दुखों से लड़ने में है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: युद्ध की चोट और गति-रोधक शूल स्वीकार करने वाली पंक्तियों से कविता का संघर्षशील संदेश चुनें।

2(v). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

	स्तंभ-I		स्तंभ-II
1.	जीवन-मरु	(i)	सुखद परिस्थितियाँ
2.	नंदन-कानन	(ii)	विपरीत परिस्थितियाँ
3.	गति-रोधक	(iii)	उत्तरोत्तर उन्नति में बाधक

विकल्प : [1 अंक]

(A) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

(B) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

(C) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i)

(D) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

सही उत्तर: (B) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

हल:

अवधारणा:

- जीवन-मरु जीवन की शुष्क, कठिन और विपरीत परिस्थितियों का प्रतीक है।
- नंदन-कानन सुखद स्थिति को और गति-रोधक आगे बढ़ने में बाधा को सूचित करता है।

चरण 1: प्रत्येक पद का अर्थ तय करना मरु अर्थात मरुस्थल कठिन और अभावपूर्ण जीवन-स्थिति का बोध कराता है, इसलिए 1 का मिलान (ii) से होगा। नंदन-कानन सुखद उद्यान का संकेत है, इसलिए 2 का मिलान (i) से होगा। गति-रोधक आगे की गति रोकने वाला

है, इसलिए 3 का मिलान (iii) से होगा।

चरण 2: पूरे क्रम से विकल्प चुनना प्राप्त क्रम 1-(ii), 2-(i), 3-(iii) है, जो (B) में है। (A) जीवन-मरु और नंदन-कानन के अर्थ उलटता है। (C) जीवन-मरु को उन्नति की बाधा और गति-रोधक को सुखद स्थिति मानता है। (D) भी जीवन-मरु तथा गति-रोधक के मिलान गलत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही मिलान 1-(ii), 2-(i), 3-(iii) है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले स्पष्ट पद गति-रोधक को (iii) से मिलाएँ, फिर मरु और उद्यान के विपरीत भाव पहचानें।

3(i). समाचार माध्यमों में किसी समाचार को प्रकाशन हेतु स्वीकार करने की निश्चित समय-सीमा को कहा जाता है : [1 अंक]

(A) ऑन लाइन

(B) ऑफ लाइन

(C) डेड लाइन

(D) डेथ लाइन

सही उत्तर: (C) डेड लाइन

हल:

अवधारणा:

- समाचार संस्थान प्रकाशन की तैयारी के लिए सामग्री प्राप्त करने का अंतिम समय निर्धारित करते हैं।
- प्रकाशन हेतु समाचार स्वीकार करने की निश्चित अंतिम समय-सीमा को डेड लाइन कहते हैं।

चरण 1: प्रश्न के संकेत पहचानना प्रश्न में समाचार की विषय-वस्तु या इंटरनेट से जुड़ाव नहीं, उसे प्रकाशन के लिए स्वीकार करने की निश्चित समय-सीमा पूछी गई है। संपादन, पृष्ठ-सज्जा और प्रकाशन समय पर पूरा करने के लिए इस सीमा का पालन आवश्यक होता है। इसी अंतिम निर्धारित समय का पारिभाषिक नाम डेड लाइन है।

चरण 2: अन्य पदों से अंतर करना (A) ऑन लाइन नेटवर्क या इंटरनेट से जुड़े होने की स्थिति बताता है। (B) ऑफ लाइन उससे अलग होने की स्थिति है। ये सामग्री स्वीकार करने का अंतिम समय नहीं हैं। (D) डेथ लाइन इस संदर्भ का मानक पत्रकारिता पद नहीं है। इसलिए केवल (C) प्रश्न की परिभाषा से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार स्वीकार करने की निश्चित समय-सीमा डेड लाइन कहलाती है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में निश्चित समय-सीमा दिखे तो उसे समाचार संस्थान की डेड लाइन से जोड़ें।

3(ii). एच टी एम एल क्या है ? [1 अंक]

(A) वेबसाइट

(B) वेबसीरीज़

(C) वेबफ़िल्म

(D) वेबभाषा

सही उत्तर: (D) वेबभाषा

हल:

अवधारणा:

- एच टी एम एल वेब पृष्ठ की सामग्री और संरचना निर्धारित करने वाली मार्कअप भाषा है।
- वेबसाइट उससे बनने वाला पृष्ठों का समूह हो सकती है; भाषा और उससे निर्मित सामग्री अलग हैं।

चरण 1: एच टी एम एल का कार्य समझना एच टी एम एल में टैगों के माध्यम से वेब पृष्ठ के शीर्षक, अनुच्छेद, लिंक तथा अन्य सामग्री की संरचना दी जाती है। इसलिए यह वेब पृष्ठ बनाने में प्रयुक्त भाषा की श्रेणी में आता है। प्रश्न में दिए सामान्य वर्गीकरण के अनुसार इसका उपयुक्त परिचय वेबभाषा है।

चरण 2: दिए गए विकल्पों की जाँच (A) वेबसाइट वेब पृष्ठों का संग्रह है, स्वयं एच टी एम एल का नाम नहीं। (B) वेबसीरीज़ और (C) वेबफ़िल्म इंटरनेट पर प्रस्तुत दृश्य-श्रव्य रचनाएँ हैं; वे पृष्ठ की संरचना बताने वाली भाषा नहीं हैं। (D) वेबभाषा एच टी एम एल की प्रकृति को सही प्रकार व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष एच टी एम एल एक वेबभाषा है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: एच टी एम एल को पृष्ठ के टैग और संरचना से जोड़ें; वेबसाइट या वीडियो-सामग्री से भ्रमित न हों।

3(iii). 'अख़बार की आवाज़' किसे माना जाता है ? [1 अंक]

(A) पहले पृष्ठ पर छपे मुख्य समाचार को

(B) संपादकीय पृष्ठ पर लिखे गए संपादकीय को

(C) अर्थव्यवस्था से जुड़ी ख़बरों को

(D) अंतिम पृष्ठ पर छपे विदेशी समाचारों को

सही उत्तर: (B) संपादकीय पृष्ठ पर लिखे गए संपादकीय को

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रमुख शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।
- सही विकल्प को प्रश्न के आशय से मिलाकर शेष विकल्पों की असंगति पहचाननी चाहिए।

चरण 1: आशय समझना संपादकीय में समाचार-पत्र किसी समसामयिक विषय पर अपना विचार और दृष्टिकोण व्यक्त करता है। इसीलिए उसे अख़बार की आवाज़ कहा जाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच मुख्य समाचार घटना की सूचना देता है; वह अपने-आप पत्र का मत नहीं होता। अर्थव्यवस्था की ख़बरें एक विषय-क्षेत्र से और विदेशी समाचार एक भौगोलिक क्षेत्र से संबंधित होते हैं। इसलिए (A), (C) और (D) अख़बार की सामूहिक वैचारिक आवाज़ को नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष अख़बार की आवाज़ संपादकीय पृष्ठ पर लिखे गए संपादकीय को माना जाता है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: अख़बार की आवाज़ पूछे जाने पर संस्था के मत को खोजें; समाचार की सूचना और संपादकीय के विचार में अंतर करें।

3(iv). पत्रकार द्वारा साक्षात्कार लिए जाने का उद्देश्य है : [1 अंक]

(A) समाचार, फ़ीचर, विशेष रिपोर्ट के लिए सामग्री एकत्रित करना

(B) साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति को प्रसिद्धि दिलाना

(C) पत्रकार द्वारा अपनी विशेष योग्यता दर्शाना

(D) पत्रकार द्वारा अपनी जिज्ञासा पूरी करना

सही उत्तर: (A) समाचार, फ़ीचर, विशेष रिपोर्ट के लिए सामग्री एकत्रित करना

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रमुख शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।
- सही विकल्प को प्रश्न के आशय से मिलाकर शेष विकल्पों की असंगति पहचाननी चाहिए।

चरण 1: आशय समझना साक्षात्कार में पत्रकार किसी व्यक्ति से प्रश्न पूछकर विषय से जुड़ी तथ्यपूर्ण जानकारी, अनुभव और विचार प्राप्त करता है। इस सामग्री का उपयोग समाचार, फ़ीचर और विशेष रिपोर्ट तैयार करने में होता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच व्यक्ति को प्रसिद्धि दिलाना (B) पत्रकार का मूल उद्देश्य नहीं है। अपनी योग्यता दिखाना (C) निजी प्रदर्शन है और केवल अपनी जिज्ञासा शांत करना (D) निजी प्रयोजन है। पत्रकार का प्रयोजन पाठकों के लिए उपयोगी सामग्री जुटाना है।

चरण 3: निष्कर्ष साक्षात्कार का उद्देश्य समाचार, फ़ीचर और विशेष रिपोर्ट के लिए सामग्री एकत्रित करना है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: साक्षात्कार का उद्देश्य चुनते समय पत्रकार के निजी लाभ के बजाय रिपोर्ट तैयार करने के लिए जुटाई जाने वाली सामग्री पर ध्यान दें।

3(v). टेलीविज़न के लिए समाचार या आलेख लेखन के लिए अनिवार्य है : [1 अंक]

(A) शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों

(B) समाचार की भाषा आंचलिक शब्दावली से युक्त हो

(C) समाचारों के बीच-बीच में दृश्य अवश्य उपस्थित हों

(D) बाइट, ग्राफिक के माध्यम से समाचारों की प्रस्तुति हो

सही उत्तर: (A) शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रमुख शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।
- सही विकल्प को प्रश्न के आशय से मिलाकर शेष विकल्पों की असंगति पहचाननी चाहिए।

चरण 1: आशय समझना टेलीविज़न दृश्य और ध्वनि का संयुक्त माध्यम है। समाचार के शब्द परदे पर दिखाई देने वाले दृश्य से मेल खाने चाहिए, तभी दर्शक को घटना का स्पष्ट तथा संगत अर्थ मिलता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच आंचलिक शब्दावली (B) अनिवार्य नहीं है; भाषा व्यापक दर्शक-वर्ग के लिए सहज होनी चाहिए। दृश्य बीच-बीच में रखना (C) शब्द-दृश्य के संबंध का नियम नहीं बताता। बाइट और ग्राफिक (D) प्रस्तुति के साधन हैं, हर समाचार की अनिवार्य शर्त नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष शब्दों का परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल होना अनिवार्य है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: टेलीविज़न में शब्द और दृश्य एक साथ ग्रहण किए जाते हैं; अनिवार्य नियम पहचानने के लिए दोनों की अनुकूलता जाँचें।

4. झूमने लगे फल,
रस अलौकिक
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना। [5 अंक]

4(i). कवि-कर्म की दृष्टि से 'झूमने लगे फल' का आशय है : [1 अंक]

(A) कृति का पूर्ण रूप ग्रहण करना
(B) साहित्य का आनंद आना
(C) खेतों में फ़सल लहलहाना
(D) हृदय का प्रसन्नता से झूमना

सही उत्तर: (A) कृति का पूर्ण रूप ग्रहण करना

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रमुख शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।
- सही विकल्प को प्रश्न के आशय से मिलाकर शेष विकल्पों की असंगति पहचाननी चाहिए।

चरण 1: आशय समझना कवि ने काव्य-सृजन को खेती के रूपक में व्यक्त किया है। इस संदर्भ में 'फल' वास्तविक खेत के फल नहीं, तैयार साहित्यिक रचना का संकेत हैं। 'झूमने लगे फल' से रचना के पूर्ण रूप लेने का भाव निकलता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच साहित्य का आनंद आना (B) पाठक पर होने वाला प्रभाव है, रचना की पूर्णता का संकेत नहीं। खेत में फ़सल लहलहाना (C) केवल शाब्दिक अर्थ है। हृदय का प्रसन्न होना (D) सामान्य भाव है, जबकि प्रश्न विशेष रूप से कवि-कर्म का आशय पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि-कर्म की दृष्टि से इसका आशय कृति का पूर्ण रूप ग्रहण करना है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कवि-कर्म शब्द देखते ही खेती के रूपक को रचना-प्रक्रिया से जोड़ें; यहाँ फल तैयार कृति का संकेत हैं।

4(ii). निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए पद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए : [1 अंक]

(A) कविता का आनंद शाश्वत है।
(B) कविता का आनंद क्षणिक है।
(C) कविता का आनंद सीमित है।
(D) कविता का आनंद अल्पकाल तक है।

सही उत्तर: (A) कविता का आनंद शाश्वत है।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रमुख शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।
- सही विकल्प को प्रश्न के आशय से मिलाकर शेष विकल्पों की असंगति पहचाननी चाहिए।

चरण 1: आशय समझना पद्यांश में 'कटाई अनंतता की' तथा 'लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती' कहा गया है। ये कथन बताते हैं कि कविता से मिलने वाला आनंद समय के साथ समाप्त नहीं होता और बार-बार ग्रहण किया जा सकता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच क्षणिक (B) और अल्पकाल तक (D) आनंद की थोड़े समय की अवधि बताते हैं, जो अनंतता के विपरीत है। सीमित (C) आनंद के समाप्त हो सकने का भाव देता है, जबकि पद्यांश उसे अक्षय बताता है। इसलिए केवल शाश्वत होने का कथन अनुकूल है।

चरण 3: निष्कर्ष पद्यांश के अनुसार कविता का आनंद शाश्वत है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कटाई अनंतता की और जरा भी नहीं कम होती को साथ पढ़ें; ये दोनों संकेत आनंद के शाश्वत होने की पुष्टि करते हैं।

4(iii). काव्यांश में 'अलौकिक' से तात्पर्य है : [1 अंक]

(A) लौकिक

(B) अद्भुत

(C) अल्पज्ञ

(D) आस्था

सही उत्तर: (B) अद्भुत

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रमुख शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।
- सही विकल्प को प्रश्न के आशय से मिलाकर शेष विकल्पों की असंगति पहचाननी चाहिए।

चरण 1: आशय समझना 'अलौकिक' शब्द यहाँ साधारण अनुभव से बढ़कर मिलने वाले विलक्षण और अद्भुत काव्य-रस का विशेषण है। इसके बाद की 'अमृत धाराएँ' भी आनंद की असाधारणता को पुष्ट करती हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच लौकिक (A) सांसारिक या सामान्य जगत से संबंधित होने का अर्थ देता है, जो अलौकिक के विपरीत है। अल्पज्ञ (C) कम जानने वाले को कहते हैं और आस्था (D) विश्वास का नाम है। ये दोनों शब्द इस प्रसंग में रस की विशेषता व्यक्त नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में अलौकिक से तात्पर्य अद्भुत है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: अलौकिक का अर्थ तय करने के लिए उसके साथ आए रस और अमृत धाराएँ पढ़ें; ये साधारण से बढ़कर अद्भुत आनंद बताते हैं।

4(iv). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : काव्यानंद जितना ही बँटता है उतना ही बढ़ता जाता है।

कारण : साहित्य-सृजन प्राणिमात्र के मंगल के लिए है, काव्यानंद का वितरण लोक के आनंद का संवर्धन है।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण ग़लत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँचनी चाहिए।
- कारण कथन में कही गई बात का आधार स्पष्ट करे तभी वह उसकी सही व्याख्या होता है।

चरण 1: कथन की जाँच कथन सही है। पद्यांश में रस को अक्षय बताया गया है और कहा गया है कि लुटते रहने से वह कम नहीं होता। कविता का आनंद साझा करने से अधिक लोगों तक पहुँचता है और उसका विस्तार होता है।

चरण 2: कारण की जाँच कारण भी सही है। साहित्य-सृजन का आनंद पाठकों के जीवन को समृद्ध करता है। काव्यानंद का वितरण समाज के आनंद में वृद्धि करता है; उसका लाभ केवल रचनाकार तक सीमित नहीं रहता।

चरण 3: व्याख्या के संबंध की जाँच लोक के आनंद का संवर्धन ही काव्यानंद के बाँटने पर बढ़ने का आधार है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (A) और (B) किसी एक को गलत बताते हैं, तथा (C) उनके व्याख्यात्मक संबंध को नकारता है; ये तीनों असंगत हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: बाँटने से बढ़ने वाले आनंद को लोक के आनंद के संवर्धन से जोड़ें; यही कारण और कथन का व्याख्यात्मक संबंध है।

4(v). 'रस का अक्षय पात्र' किसे कहा गया है ? [1 अंक]

(A) कवि हृदय को

(B) कविता पढ़ने से मिले आनंद को

(C) साहित्य को

(D) चौकोने छोटे खेत को

सही उत्तर: (C) साहित्य को

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के प्रमुख शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।
- सही विकल्प को प्रश्न के आशय से मिलाकर शेष विकल्पों की असंगति पहचाननी चाहिए।

चरण 1: आशय समझना 'लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती' तथा 'रस का अक्षय पात्र' साहित्य की विशेषता बताते हैं। साहित्य से अनेक पाठक आनंद लेते हैं, फिर भी उसका रस समाप्त नहीं होता। इसीलिए वह रस का कभी खाली न होने वाला पात्र है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कवि-हृदय (A) सृजन का स्रोत है, यहाँ रस के स्थायी पात्र का अभिप्राय नहीं। कविता पढ़ने से मिला

आनंद (B) साहित्य का प्रभाव है, स्वयं पात्र नहीं। चौकोना खेत (D) रूपक का बाहरी चित्र है; उसके माध्यम से यहाँ साहित्य के अक्षय रस का संकेत किया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष रस का अक्षय पात्र साहित्य को कहा गया है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: अक्षय पात्र में पात्र और रस का अंतर पहचानें; साहित्य पात्र है और उससे मिलने वाला आनंद उसका रस है।

---

5. जाड़े का दिन। अमावस्या की रात – ठंडी और काली। मलेरिया और हैज़े से पीड़ित गाँव भयार्त्त शिशु की तरह थर-थर काँप रहा था। पुरानी और उजड़ी बाँस-फूस की झोपड़ियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य ! अँधेरा और निस्तब्धता !

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे। [5 अंक]

5(i). गद्यांश में प्रयुक्त 'भयार्त्त' शब्द का अर्थ है : [1 अंक]

(A) भीषण

(B) भय से पीड़ित

(C) भयंकर

(D) भयानक

सही उत्तर: (B) भय से पीड़ित

हल:

अवधारणा:

- शब्द का अर्थ उसके गठन और वाक्य के प्रसंग, दोनों से पहचाना जाता है।
- भय से काँपते शिशु की उपमा गाँव की व्याकुल अवस्था स्पष्ट करती है।

चरण 1: शब्द का अर्थ खोलें 'भयार्त्त' में भय और आर्त होने का भाव जुड़ा है। आर्त का आशय पीड़ित अथवा व्याकुल है। इसलिए यह शब्द ऐसे व्यक्ति की स्थिति बताता है जो डर से पीड़ित हो। गद्यांश में गाँव का शिशु की तरह थर-थर काँपना इसी अर्थ की पुष्टि करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण करें (A) भीषण, (C) भयंकर और (D) भयानक किसी वस्तु या परिस्थिति के डरावने होने का बोध कराते हैं। वे स्वयं भय अनुभव करने वाले की पीड़ा नहीं बताते। यहाँ गाँव भय उत्पन्न नहीं कर रहा, बल्कि महामारी के कारण भय अनुभव कर रहा है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) भय से पीड़ित है।

त्वरित सुझाव: भय पैदा करने वाले और भय अनुभव करने वाले का अंतर पहचानकर शब्दार्थ चुनें।

5(ii). गद्यांश का केन्द्रीय भाव है : [1 अंक]

(A) गाँव की प्रकृति का चित्रण

(B) गाँव की रात्रि का चित्रण

(C) भूख और महामारी से दम तोड़ रहे गाँव की दयनीय दशा का चित्रण

(D) गाँव में व्याप्त नीरवता का चित्रण

सही उत्तर: (C) भूख और महामारी से दम तोड़ रहे गाँव की दयनीय दशा का चित्रण

हल:

अवधारणा:

- केन्द्रीय भाव में पूरे अनुच्छेद की मुख्य संवेदना समाहित होती है।
- प्रकृति और परिवेश के बिंब यहाँ महामारीग्रस्त गाँव की करुण दशा उभारते हैं।

चरण 1: गद्यांश का मुख्य स्वर पहचानें मलेरिया और हैज़े से पीड़ित गाँव का भय से काँपना, उजड़ी झोपड़ियाँ तथा करुण सिसकियाँ गाँव की दयनीय दशा को सामने लाते हैं। अँधेरा और निस्तब्धता इसी पीड़ा को गहरा करते हैं। इसलिए रोग, अभाव और असहायता पूरे वर्णन का केन्द्र हैं।

चरण 2: सीमित विकल्प अलग करें (A) प्रकृति, (B) रात्रि और (D) नीरवता के चित्रण वर्णन के कुछ अंग हैं, पर वे उसकी पूरी करुण संवेदना नहीं समेटते। (C) में भूख और महामारी से दम तोड़ते गाँव की दयनीयता कही गई है; दिए विकल्पों में यही पूरे प्रसंग का सबसे व्यापक भाव व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) भूख और महामारी से दम तोड़ रहे गाँव की दयनीय दशा का चित्रण है।

त्वरित सुझाव: केन्द्रीय भाव चुनते समय दृश्य के विवरण से आगे बढ़कर उसकी मानवीय पीड़ा पहचानें।

5(iii). निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए : [1 अंक]

(A) महामारी और आर्थिक तंगी की त्रासदी से जूझती ग्राम-बस्ती में आशा-किरण का आश्रय व्यर्थ प्रयास है।

(B) महामारी और आर्थिक तंगी की त्रासदी से जूझती ग्राम-बस्ती आशा-निराशा के भाव में झूल रही है।

(C) महामारी और आर्थिक तंगी से जूझती ग्राम-बस्ती में ग्रामीण एक दूसरे की सहायता कर रहे हैं।

(D) महामारी और आर्थिक तंगी से जूझती ग्राम-बस्ती अपनी स्थिति से संतुष्ट है।

सही उत्तर: (A) महामारी और आर्थिक तंगी की त्रासदी से जूझती ग्राम-बस्ती में आशा-किरण का आश्रय व्यर्थ प्रयास है।

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकात्मक वर्णन का अर्थ गद्यांश में उसके परिणाम से निर्धारित होता है।
- धरती तक पहुँचने से पहले तारे की ज्योति समाप्त होना सहायता की विफलता दिखाता है।

चरण 1: तारे के बिंब का अर्थ समझें गद्यांश में पृथ्वी पर प्रकाश का नाम नहीं है। कोई भावुक तारा वहाँ जाना भी चाहता है तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में समाप्त हो जाती है। इस विशेष दृश्य में आशा या सहायता पहुँचाने का प्रयास निष्फल रह जाता है। यह उस समय की घोर निराशा का चित्र है।

चरण 2: कथनों की तुलना करें (A) आशा-किरण के प्रयास की विफलता बताता है, इसलिए वर्णित प्रसंग से मेल खाता है। (B) आशा और निराशा के बीच झूलना कहता है, जबकि यहाँ सफल आशा का दृश्य नहीं है। (C) परस्पर सहायता का कोई उदाहरण नहीं दिया गया है। (D) संतोष का कथन भय, सिसकियों और आहों के विपरीत है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है। गद्यांश के वर्णित दृश्य में आशा-किरण का प्रयास भी निष्फल दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: तारे का अर्थ केवल आशा मानकर न रुकें; देखें कि उसकी ज्योति अंततः गाँव तक पहुँचती है या नहीं।

5(iv). प्रकृति को आँसू बहाते हुए क्यों दिखाया गया है ? [1 अंक]

(A) काव्यात्मक रूप में प्रकृति सौंदर्य व्यक्त करने हेतु

(B) गाँव वालों के दुख में प्रकृति को दुखी दिखाने हेतु

(C) गाँव में व्याप्त सन्नाटे और अंधकार का वर्णन करने हेतु

(D) प्रकृति की विवशता और असमर्थता को प्रकट करने हेतु

सही उत्तर: (B) गाँव वालों के दुख में प्रकृति को दुखी दिखाने हेतु

हल:

अवधारणा:

- मानवीकरण में प्रकृति या निर्जीव तत्व को मनुष्य के भाव दिए जाते हैं।
- रात के आँसू गाँव वालों के दुख के साथ वातावरण की करुण संगति बनाते हैं।

चरण 1: मानवीकरण का प्रयोजन समझें अँधेरी रात का चुपचाप आँसू बहाना मानवीकरण है। उसके साथ करुण सिसकियों और आहों का उल्लेख भी है। इस प्रकार लेखक ग्रामीणों की वेदना इतनी व्यापक बनाता है कि आसपास की प्रकृति भी उनकी पीड़ा में शामिल लगती है।

चरण 2: विकल्पों को प्रसंग से मिलाएँ (B) गाँव वालों के दुख में प्रकृति को दुखी दिखाने का यही आशय कहता है। (A) सौंदर्य प्रदर्शन यहाँ मुख्य उद्देश्य नहीं है। (C) सन्नाटा और अंधकार वातावरण के अंग हैं, पर आँसू बहाने का भावात्मक कारण नहीं बताते। (D) असमर्थता का संकेत तारे के विफल प्रयास में अधिक स्पष्ट है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) गाँव वालों के दुख में प्रकृति को दुखी दिखाने हेतु है।

त्वरित सुझाव: मानवीकरण का उद्देश्य पहचानने के लिए प्रकृति को दिए मानवीय भाव को पात्रों की स्थिति से जोड़ें।

5(v). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

	स्तंभ-I		स्तंभ-II
1.	अमावस्या की रात – ठंडी और काली	(i)	आशा एवं जिजीविषा का अभाव
2.	प्रकाश का नाम नहीं	(ii)	पीड़ित गाँव वालों की मदद न कर पाना
3.	तारे की शक्ति और ज्योति रास्ते में ही शेष हो जाती	(iii)	निराशापूर्ण परिवेश

विकल्प : [1 अंक]

(A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

(B) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

(C) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i)

(D) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i)

सही उत्तर: (A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

हल:

अवधारणा:

- सुमेलन में हर बिंब को उसके विशिष्ट प्रतीकात्मक अर्थ से जोड़ना चाहिए।
- एक ही गद्यांश के अलग बिंब परिवेश, आशा और सहायता के अलग पक्ष दिखा सकते हैं।

चरण 1: पहले दो बिंबों का सुमेलन करें अमावस्या की ठंडी और काली रात दुख तथा भय से भरे निराशापूर्ण परिवेश का बोध कराती है, इसलिए 1 का संबंध (iii) से है। प्रकाश का नाम न होना आशा एवं जिजीविषा के अभाव का प्रतीक है, इसलिए 2 का संबंध (i) से है।

चरण 2: तीसरा संबंध और विकल्प जाँचें तारे की ज्योति और शक्ति रास्ते में समाप्त होने से सहायता गाँव तक नहीं पहुँचती। इसलिए 3 का संबंध (ii), पीड़ित गाँव वालों की मदद न कर पाना, से है। (A) में तीनों संबंध इसी क्रम में हैं। (B) और (C) में पहला संबंध ही गलत है; (D) में दूसरे और तीसरे संबंध उलट गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही सुमेलन 1-(iii), 2-(i), 3-(ii) है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पहले सबसे स्पष्ट बिंब का संबंध तय करें, फिर शेष दोनों को उनके अलग आशयों से जाँचें।

6(i). यशोधर बाबू अपने मातहतों से छुट्टी के समय मनोरंजक बात क्यों करते थे ? [1 अंक]

(A) दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए

(B) अपने काम का भार अपने मातहतों पर डालने के लिए

(C) कर्मचारियों को देर तक दफ़्तर में रोकने के लिए

(D) कर्मचारियों और अपने बीच की दूरी समाप्त करने के लिए

सही उत्तर: (A) दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- पात्र के व्यवहार का उद्देश्य कहानी में बताए कार्यालयी प्रसंग से समझा जाता है।
- यशोधर बाबू की छुट्टी के समय की बातचीत उनके दिनभर के औपचारिक व्यवहार को सहज बनाती है।

चरण 1: व्यवहार का प्रसंग समझें यशोधर बाबू कार्यालय में कामकाज के दौरान मातहतों के साथ शुष्क और औपचारिक ढंग से व्यवहार करते थे। छुट्टी के समय मनोरंजक बातें करना उसी दिनभर के रूखेपन का निराकरण करने का उनका तरीका था। इससे विदा होते समय वातावरण कुछ हलका और सहज हो जाता था।

चरण 2: शेष उद्देश्यों को परखें (A) दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने की बात सीधे उस उद्देश्य को व्यक्त करती है। (B) काम का भार डालना और (C) देर तक दफ़्तर में रोकना इस मनोरंजक बातचीत के कारण नहीं थे। (D) दूरी पूरी तरह समाप्त करने की बात व्यापक है; प्रश्न में विशेष रूप से दिनभर के रूखे व्यवहार की भरपाई का प्रसंग है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए है।

त्वरित सुझाव: कहानी के व्यवहार संबंधी प्रश्न में सामान्य सद्भावना से अधिक उसके विशेष प्रसंग पर ध्यान दें।

6(ii). "हम लोगों के यहाँ सिल्वर वैडिंग कब से होने लगी है।" यह कथन किसके द्वारा किसे संबोधित कर कहा गया है ? [1 अंक]

(A) यशोधर बाबू द्वारा अपने बेटे भूषण को

(B) यशोधर बाबू द्वारा अपनी बड़ी बेटी को

(C) यशोधर बाबू द्वारा अपनी पत्नी को

(D) यशोधर बाबू द्वारा चड्ढा को

सही उत्तर: (D) यशोधर बाबू द्वारा चड्ढा को

हल:

अवधारणा:

- संवाद का वक्ता और श्रोता पहचानने के लिए कहानी का तत्काल प्रसंग याद करना आवश्यक है।
- यशोधर बाबू का संवाद सिल्वर वैडिंग मनाने की नई प्रथा के प्रति उनके संकोच को दिखाता है।

चरण 1: संवाद का अवसर पहचानें कार्यालय में विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ अर्थात सिल्वर वैडिंग की चर्चा चड्ढा करता है। उसी बातचीत में यशोधर बाबू यह प्रश्न उठाते हैं कि उनके यहाँ सिल्वर वैडिंग मनाने की प्रथा कब से होने लगी है। इस संवाद में वक्ता यशोधर बाबू और सामने चड्ढा है।

चरण 2: विकल्पों में संबोधित व्यक्ति जाँचें (D) यशोधर बाबू द्वारा चड्ढा को कहा जाना इस कार्यालयी प्रसंग से मेल खाता है। (A) बेटे भूषण, (B) बड़ी बेटी और (C) पत्नी परिवार के सदस्य हैं, लेकिन उक्त वाक्य इस स्थान पर उनसे नहीं कहा गया है। पारिवारिक आयोजन और कार्यालय में हुई शुरुआती बातचीत को अलग रखना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) यशोधर बाबू द्वारा चड्ढा को है।

त्वरित सुझाव: संवाद का श्रोता चुनते समय विषय से जुड़े सभी पात्रों के बजाय उस समय सामने मौजूद पात्र पहचानें।

6(iii). 'जूझ' कहानी के लेखक को कविता लिखने की प्रेरणा किससे मिली ? [1 अंक]

(A) अपने पिता से

(B) अपनी माँ से

(C) न.वा. सौंदलगेकर से

(D) अपने मित्र से

सही उत्तर: (C) न.वा. सौंदलगेकर से

हल:

अवधारणा:

- साहित्यिक प्रेरणा के प्रश्न में उस व्यक्ति की भूमिका पहचानें जिसने लेखक की रुचि को विकसित किया।
- शिक्षक का सस्वर काव्यपाठ और अर्थबोध लेखक के भीतर कविता रचने की इच्छा जगाते हैं।

चरण 1: शिक्षक की भूमिका स्पष्ट करें न.वा. सौंदलगेकर कविता को भावपूर्ण ढंग से पढ़ाते और उसकी लय तथा सौंदर्य का अनुभव कराते थे। उनके काव्यपाठ ने लेखक को कविता के प्रति आकर्षित किया। कविता सुनने और समझने का यह आनंद धीरे-धीरे स्वयं कविता रचने की प्रेरणा बना।

चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर करें (C) में दिए न.वा. सौंदलगेकर ही कविता लिखने की प्रेरणा के स्रोत हैं। (A) पिता का संबंध लेखक के श्रम और पढ़ाई के संघर्ष से है। (B) माँ संघर्ष में सहारा देती है, लेकिन इस काव्यप्रेरणा का स्रोत नहीं है। (D) मित्र की भूमिका को भी पाठ में इस प्रेरणा का कारण नहीं बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) न.वा. सौंदलगेकर से है।

त्वरित सुझाव: लेखक की पढ़ाई में सहायता करने वाले और कविता रचना की प्रेरणा देने वाले व्यक्ति में अंतर करें।

6(iv). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए।

कथन I : वसंत पाटील पढ़ने में बहुत कमजोर था।

कथन II : वसंत पाटील आनंदा का शत्रु था।

कथन III : वसंत पाटील कक्षा का मॉनीटर था।

कथन IV : वसंत पाटील कक्षा बारहवीं का छात्र था।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन I तथा II सही हैं।

(B) कथन I, II तथा III सही हैं।

(C) कथन III सही है।

(D) कथन IV सही है।

सही उत्तर: (C) कथन III सही है।

हल:

अवधारणा:

- चरित्र संबंधी कथनों को पाठ में दिए गए व्यवहार और भूमिका के आधार पर परखना चाहिए।
- वसंत पाटील पढ़ाई में अच्छा तथा आनंदा का सहयोगी सहपाठी था।

चरण 1: कथनों की जाँच वसंत पाटील पढ़ने में कमजोर नहीं था। वह अपनी पढ़ाई मन लगाकर करता था और कक्षा में उसकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। इसलिए कथन I असत्य है। वह आनंदा का शत्रु भी नहीं था; उसकी संगति और सहायता से आनंदा की पढ़ाई सुधरती है। अतः कथन II भी असत्य है।

चरण 2: सही भूमिका पहचानना वसंत पाटील कक्षा का मॉनीटर था, इसलिए कथन III सही है। इस प्रसंग में उसे बारहवीं कक्षा का छात्र नहीं बताया गया है, अतः कथन IV गलत है। विकल्प (A) और (B) असत्य कथनों को सही मानते हैं तथा (D) गलत कक्षा बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन III सही है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: मॉनीटर और सहयोगी सहपाठी की भूमिका याद रखकर चारों कथनों को अलग-अलग जाँचें।

6(ix). 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में प्रयुक्त 'असीक का फूल' से क्या तात्पर्य है ? [1 अंक]

(A) स्वागत के फूल

(B) आशीर्वाद के फूल

(C) माला बनाने के फूल

(D) पूजा के फूल

सही उत्तर: (B) आशीर्वाद के फूल

हल:

अवधारणा:

- आंचलिक अभिव्यक्ति का अर्थ कहानी की पारिवारिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से निर्धारित होता है।
- असीक शब्द का आशय आशीष या आशीर्वाद से है।

चरण 1: शब्द का अर्थ समझना कहानी में प्रयुक्त असीक का संबंध आशीष से है। इसलिए असीक का फूल आशीर्वाद के रूप में दिया जाने वाला फूल है। इस अभिव्यक्ति में फूल से अधिक महत्त्व उससे जुड़े शुभकामना और स्नेह के भाव का है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर करना स्वागत के फूल अतिथि के अभिनंदन के लिए होते हैं। माला बनाने के फूल उनका उपयोग बताते हैं और पूजा के फूल धार्मिक अर्पण को सूचित करते हैं। ये तीनों अर्थ असीक शब्द के आशीर्वाद वाले आशय को व्यक्त नहीं करते। इसलिए (A), (C) और (D) उपयुक्त नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष असीक का फूल का तात्पर्य आशीर्वाद के फूल से है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: असीक को आशीष से जोड़ें; अर्थ चुनते समय फूल के उपयोग से अधिक उसमें निहित भाव देखें।

6(v). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : सिंधु सभ्यता को जल-संस्कृति कहा जाता है।

कारण : सिंधु घाटी सभ्यता पहली ज्ञात संस्कृति है जिसमें लगभग सात सौ कुएँ, नदी, स्नानागार और बेजोड़ जल निकासी की व्यवस्था है।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण ग़लत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण वाले प्रश्न में दोनों की सत्यता तथा उनके व्याख्यात्मक संबंध की जाँच की जाती है।
- जल-संस्कृति का अर्थ जीवन और नगर-व्यवस्था में जल के सुनियोजित उपयोग का विशेष महत्त्व है।

चरण 1: कथन की सत्यता सिंधु सभ्यता को जल-संस्कृति कहना सही है। वहाँ जल केवल दैनिक आवश्यकता की वस्तु नहीं था, बल्कि नगर की योजना, स्नान और स्वच्छता की व्यवस्थाओं का महत्त्वपूर्ण आधार था।

चरण 2: कारण की सत्यता पाठ में लगभग सात सौ कुओं, नदी, स्नानागार तथा बेजोड़ जल-निकासी का उल्लेख मिलता है। ये उदाहरण जल की उपलब्धता और उसके व्यवस्थित उपयोग को प्रकट करते हैं। इसलिए दिया गया कारण भी सही है।

चरण 3: कारण और कथन का संबंध कुएँ जल उपलब्ध कराते थे, स्नानागार उसके सामुदायिक उपयोग को और नालियाँ स्वच्छ निकास को दर्शाती थीं। यही विशेषताएँ जल-संस्कृति नाम का आधार हैं। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (A) और (B) सत्यता गलत बताते हैं तथा (C) दोनों का संबंध नकारता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले कथन और कारण को अलग जाँचें, फिर देखें कि कुएँ और जल-निकासी जल-संस्कृति नाम का आधार कैसे बनते हैं।

6(vi). सिंधु घाटी सभ्यता का स्वरूप था : [1 अंक]

(A) जंगली

(B) नगरीय

(C) ग्रामीण

(D) कबीलाई

सही उत्तर: (B) नगरीय

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता का स्वरूप उसकी बसावट, निर्माण और सार्वजनिक सुविधाओं से पहचाना जाता है।
- सुनियोजित सड़कें, भवन तथा जल-निकासी नगरीय जीवन के संकेत हैं।

चरण 1: नगर-योजना पहचानना सिंधु घाटी सभ्यता में व्यवस्थित सड़कें, पक्के निर्माण, कुएँ, स्नानागार और जल-निकासी की उन्नत व्यवस्था थी। ये सुविधाएँ संगठित नगर-जीवन का प्रमाण देती हैं। इसलिए इसका स्वरूप नगरीय था।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण जंगली कहना विकसित नगर-योजना की उपेक्षा करता है। ग्रामीण स्वरूप गाँव-केंद्रित जीवन को और कबीलाई स्वरूप जनजातीय संगठन को बताता है। पाठ में वर्णित विकसित सार्वजनिक निर्माण और सुव्यवस्थित नगर इन तीनों विकल्पों के स्थान पर नगरीय स्वरूप की पुष्टि करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु घाटी सभ्यता का स्वरूप नगरीय था। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सड़क, स्नानागार और जल-निकासी जैसे सार्वजनिक निर्माण दिखें तो सभ्यता का नगरीय स्वरूप पहचानें।

6(vii). वर्तमान में सिंध की खास पहचान क्या बन गया ? [1 अंक]

(A) दाढ़ी वाले 'नरेश' की मूर्ति

(B) गुलकारी वाला दुपट्टा

(C) छापे वाला कपड़ा 'अजरक'

(D) बारीक बुनाई वाला सूती कपड़ा

सही उत्तर: (C) छापे वाला कपड़ा 'अजरक'

हल:

अवधारणा:

- सांस्कृतिक पहचान किसी क्षेत्र की विशिष्ट कला या प्रचलित वस्तु से जुड़ सकती है।
- पाठ में प्राचीन कला के साथ वर्तमान सिंध की वस्त्र-परंपरा का संबंध दिखाया गया है।

चरण 1: वर्तमान पहचान पहचानना पाठ के अनुसार छापे वाला कपड़ा अजरक आज सिंध की खास पहचान बन गया है। प्रश्न वर्तमान पहचान पूछता है, इसलिए उत्तर में इसी विशिष्ट नाम और वस्त्र का चयन आवश्यक है।

चरण 2: अन्य वस्तुओं से अंतर करना दाढ़ी वाले नरेश की मूर्ति पुरातात्त्विक कला का उदाहरण है; वह यहाँ पूछी गई वर्तमान वस्त्र-पहचान नहीं है। गुलकारी वाला दुपट्टा और बारीक बुनाई वाला सूती कपड़ा वस्त्रों के वर्णन हैं, पर पाठ में वर्तमान सिंध की खास पहचान अजरक को बताया गया है। इसलिए (A), (B) और (D) गलत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष छापे वाला कपड़ा अजरक सिंध की खास पहचान बन गया है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के वर्तमान शब्द पर ध्यान दें और सिंध की आज की पहचान को अजरक नाम से जोड़कर याद रखें।

6(viii). पत्थर की शिला पर लिखी कविता 'जूझ' कहानी के लेखक के द्वारा कब मिटाई जाती थी ? [1 अंक]

(A) मास्टर को दिखा देने के बाद

(B) याद हो जाने के बाद

(C) मित्रों को दिखा देने के बाद

(D) मास्टर को सुना देने के बाद

सही उत्तर: (B) याद हो जाने के बाद

हल:

अवधारणा:

- आनंदा का कविता-लेखन अभ्यास उसके रचनात्मक लगाव और स्मरण की प्रक्रिया को दिखाता है।
- घटना के क्रम में लिखने, याद करने और मिटाने का संबंध समझना आवश्यक है।

चरण 1: लेखन का क्रम समझना जूझ में लेखक कविता रचकर पत्थर की शिला पर लिखता था। कविता याद हो जाने के बाद वह उसे मिटा देता था। इस प्रकार शिला रचना लिखने और उसे स्मृति में रखने के अभ्यास का माध्यम बनती थी।

चरण 2: विकल्पों को परखना शिला पर लिखी कविता मिटाने की शर्त मास्टर को दिखाना या सुनाना नहीं थी। इसलिए (A) तथा (D) सही नहीं हैं। मित्रों को दिखा देने की बात भी इस क्रिया का आधार नहीं है, अतः (C) गलत है। निर्णायक घटना कविता का याद हो जाना है, जिसे (B) स्पष्ट रूप से बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता याद हो जाने के बाद मिटाई जाती थी। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: घटना का क्रम याद करें: कविता रचना, शिला पर लिखना, याद करना और फिर मिटा देना।

6(x). 'जब तक बाप है तब तक मौज कर ले।' यशोधर बाबू यह बात अपने बच्चों से कहते हैं : [1 अंक]

(A) उन पर व्यंग्य करने के लिए

(B) उनका उत्साहवर्धन करने के लिए

(C) जिम्मेदारियों से मुक्त रखने के लिए

(D) उनके प्रति अपना प्रेम व्यक्त करने के लिए

सही उत्तर: (A) उन पर व्यंग्य करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- संवाद का आशय कहानी में उसके साथ दिए गए भावसूचक शब्द से समझना चाहिए।
- पाठ का तंजिया शब्द व्यंग्यात्मक ढंग को व्यक्त करता है; स्नेह छिपा होने पर भी कथन की शैली व्यंग्यपूर्ण है।

चरण 1: पाठ के संकेत को पहचानना कहानी में स्पष्ट है कि यशोधर जी यह बात कभी-कभी तंजिया कहते हैं। तंजिया का अर्थ व्यंग्यात्मक होता है। इसलिए जब तक बाप है तब तक मौज कर ले कहने में बच्चों पर हल्का तंज करने का भाव प्रमुख है। उनकी मुस्कान में स्नेह छिपा हो सकता है, पर कथन का बताया गया ढंग व्यंग्यपूर्ण है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच विकल्प (A) पाठ के तंजिया शब्द से सीधे मेल खाता है। किसी विशेष कार्य के लिए उत्साह बढ़ाने की बात नहीं है, इसलिए (B) गलत है। कथन बच्चों को जिम्मेदारियों से मुक्त रखने का निर्णय भी नहीं है, अतः (C) सही नहीं है। पिता का स्नेह मौजूद होते हुए भी यहाँ पूछी गई उक्ति का मुख्य पाठगत संकेत व्यंग्य है; इसलिए (D) सबसे उपयुक्त उत्तर नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर बाबू यह बात बच्चों पर व्यंग्य करने के लिए कहते हैं। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: संवाद का भाव पूछे जाने पर पाठ के तंजिया जैसे शब्द खोजें; तंजिया का सीधा अर्थ व्यंग्यात्मक है।

7(क). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

जी 20 शिखर सम्मेलन [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय के केंद्रीय विचार को प्रभावपूर्ण आरंभ, क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक अंत के साथ प्रस्तुत किया जाता है।
- इस विषय में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को सामान्य जनजीवन से जोड़ना उपयोगी है। लगभग 120 शब्दों का लेख तथ्यपूर्ण हो, पर केवल घटनाओं की सूची न बने।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति की योजना शीर्षक में सम्मेलन के मूल संदेश को उभारें। आरंभ में भारत की मेजबानी का संदर्भ दें, मध्य में विश्व की साझी चुनौतियों और सहयोग की आवश्यकता पर विचार रखें तथा अंत में शांति और साझा भविष्य की आशा व्यक्त करें। लेख में औपचारिक पत्र जैसा संबोधन या समापन नहीं चाहिए।

चरण 2: विचारों का क्रम और भाषा वसुधैव कुटुम्बकम् के भाव को पर्यावरण, विकास और मानवीय सहयोग से जोड़ें। सरल वाक्य, सटीक शब्द और सकारात्मक दृष्टि अपनाएँ। ऐसी घोषणाओं या उपलब्धियों का उल्लेख न करें जिनका तथ्यात्मक आधार स्पष्ट न हो। नीचे दिया गया लेख लगभग 120 शब्दों का स्वतंत्र नमूना है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **जी 20 शिखर सम्मेलन : साझा भविष्य की आशा**

भारत की अध्यक्षता में आयोजित जी 20 शिखर सम्मेलन ने विश्व को एक परिवार मानने का संदेश दिया। विविध देशों के नेताओं का एक मंच पर मिलना केवल औपचारिक आयोजन नहीं, संवाद की शक्ति का प्रमाण था। जलवायु परिवर्तन, आर्थिक असमानता और खाद्य सुरक्षा जैसी समस्याएँ किसी एक देश की सीमाओं में नहीं सिमटतीं। इनके समाधान के लिए सहयोग और परस्पर विश्वास आवश्यक हैं। भारत की सांस्कृतिक विविधता और अतिथि सत्कार ने इस आयोजन को विशेष पहचान दी। सम्मेलन ने याद दिलाया कि विकास तभी सार्थक है, जब उसका लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। मतभेदों के बीच सहमति की राह खोजना ही नेतृत्व की कसौटी है। अब आवश्यकता है कि साझा संकल्प ठोस कार्यों में बदलें और संसार अधिक न्यायपूर्ण, शांतिपूर्ण तथा सुरक्षित बने।

चरण 4: निष्कर्ष यह लेख सम्मेलन के संदर्भ, वैश्विक चुनौतियों और सहयोग के संदेश को एक सूत्र में जोड़कर साझा भविष्य की आशा व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: लगभग 120 शब्दों के लेख में एक मुख्य विचार चुनें; जी 20 को केवल नेताओं की बैठक बताने के बजाय सहयोग और जनहित से जोड़ें।

7(ख). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

वृद्धाश्रम में एक दिन [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुभवपरक रचनात्मक लेख में दृश्य, संवाद और आत्मानुभूति के सहारे विषय को जीवंत बनाया जाता है। भावुकता के साथ संवेदनशील और सम्मानपूर्ण दृष्टि आवश्यक है।
- वृद्धाश्रम के अनुभव का केंद्र बुजुर्गों की गरिमा, साथ की आवश्यकता और पीढ़ियों का संबंध है। हर वृद्धाश्रम निवासी की परिस्थिति एक जैसी मान लेना उचित नहीं है।

चरण 1: अनुभव की रूपरेखा बनाएँ आरंभ में वृद्धाश्रम पहुँचने का दृश्य रखें। फिर किसी बुजुर्ग से बातचीत, साथ बिताए क्षण और उनसे मिली सीख का वर्णन करें। अंत में अपने भीतर आए बदलाव को व्यक्त करें। शीर्षक छोटा और विषयानुकूल हो; लेख को तिथि, संबोधन या पत्र के ढाँचे में न लिखें।

चरण 2: संवेदना और शब्दसीमा का ध्यान रखें दृश्य तथा अनुभूति का संतुलन रखें। बुजुर्गों को केवल दया का पात्र बनाने के स्थान पर उनकी रुचियों, अनुभवों और आत्मीयता को सामने लाएँ। सभी परिवारों को दोष देने वाला सामान्य कथन न करें। लगभग 120 शब्दों में

एक दिन का सीमित अनुभव पर्याप्त है। नीचे एक कल्पित अनुभव पर आधारित पूर्ण नमूना है।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **वृद्धाश्रम में एक दिन**

रविवार को हम कुछ मित्र वृद्धाश्रम पहुँचे। आँगन में धूप उतर रही थी और कुर्सियों पर बैठे बुजुर्ग हमारी ओर उत्सुकता से देख रहे थे। मैंने एक दादाजी के पास बैठकर बातचीत शुरू की। वे कभी शिक्षक थे। उनके विद्यालय के किस्से सुनते हुए समय का पता ही नहीं चला। एक अम्मा ने हमें अपना प्रिय भजन सुनाया। हमने साथ खेल खेले और भोजन परोसा। वहाँ सबके पास अनुभवों का खजाना था, पर मन की बातें सुनने वाले साथी कम थे। विदा के समय दादाजी ने पूछा, फिर कब आओगे? उनके प्रश्न में छिपी अपेक्षा मेरे साथ लौट आई। उस दिन समझा कि सेवा केवल वस्तुएँ देना नहीं है; समय, सम्मान और अपनापन बाँटना भी है। मैंने नियमित आने का संकल्प लिया।

चरण 4: निष्कर्ष यह अनुभवपरक लेख एक दिन की घटनाओं से बुजुर्गों के प्रति सम्मान और नियमित आत्मीय संपर्क की आवश्यकता का बोध कराता है।

त्वरित सुझाव: वृद्धाश्रम के लेख में एक दृश्य और एक बातचीत चुनें; अंत में उनसे मिली सीख दें, केवल दुःख या उपदेश का वर्णन न करें।

7(ग). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

जल संरक्षण [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय के प्रति संवेदना, कल्पनाशील प्रस्तुति और विचारों का तार्किक क्रम होना चाहिए।
- जल संरक्षण पर लिखते समय जल का महत्त्व, संकट के कारण और दैनिक जीवन के व्यावहारिक उपाय जोड़ने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना लेख का उपयुक्त शीर्षक रखें। आरंभ में जल का जीवन से संबंध दिखाएँ, मध्य में जल के संकट और मनुष्य की जिम्मेदारी बताएँ तथा अंत में सामूहिक संकल्प रखें। लगभग 120 शब्दों की सीमा में उदाहरणों को संक्षिप्त रखें; केवल उपायों की सूची बनाने के स्थान पर विचारों को प्रवाहपूर्ण अनुच्छेद में पिरोएँ।

चरण 2: अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाना लेख में टपकती बूँद और खाली घड़े जैसे परिचित बिंब जल की कमी को अनुभव से जोड़ते हैं। इसके बाद घरेलू बचत, वर्षाजल संचयन और सामुदायिक प्रयासों का क्रम विषय को व्यापक बनाता है। अंतिम वाक्य में भविष्य की चिंता रखें, जिससे पाठक के मन में व्यक्तिगत जिम्मेदारी का भाव जागे। अनावश्यक आँकड़े या अप्रमाणित दावे जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: पूर्ण रचनात्मक लेख **जल की हर बूँद, जीवन की उम्मीद**

सुबह नल से टपकती बूँद मुझे किसी प्यासे की पुकार जैसी लगती है। जल केवल हमारी आवश्यकता नहीं, धरती की धड़कन है। फिर भी बहते नल, रिसती पाइपें और प्रदूषित नदियाँ हमारी लापरवाही की कहानी कहते हैं। गर्मियों में खाली घड़े लेकर भटकते लोगों को देखकर समझ आता है कि पानी का मूल्य पैसे से कहीं अधिक है। हमें वर्षाजल सहेजना होगा, घरों में अनावश्यक बहाव रोकना होगा और उपयोग किए हुए उपयुक्त पानी से पौधों को सींचना होगा। तालाबों की सफाई और पेड़ों की रक्षा भी हमारी जिम्मेदारी है। यदि प्रत्येक परिवार थोड़ा पानी बचाए, तो बड़ी राहत संभव है। आइए, आज ही संकल्प लें कि हमारी सुविधा किसी और की प्यास न बने। बची हुई हर बूँद भविष्य की मुसकान है।

चरण 4: निष्कर्ष लेख जल के महत्त्व को संवेदनापूर्ण आरंभ, ठोस संरक्षण उपायों और प्रेरक संकल्प के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: पहले जल से जुड़ा छोटा दृश्य सोचें, फिर संकट और उपाय जोड़कर लेख को संकल्प के साथ समाप्त करें।

8(i)(a). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

नाटक में दृश्य का क्या महत्त्व है ? किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाटक एक दृश्य-श्रव्य विधा है; रंगमंच पर घटना दर्शक के सामने घटित होती है।
- दृश्य के माध्यम से कथानक, पात्र और नाटकीय वातावरण प्रत्यक्ष तथा प्रभावपूर्ण बनते हैं।

चरण 1: दो आवश्यक बिंदु चुनना प्रश्न दृश्य के दो महत्त्व पूछता है। पहले कथानक के प्रत्यक्ष विकास और दूसरे पात्रों की मनःस्थिति के संप्रेषण पर ध्यान दें। मंच-सज्जा, पात्रों के हाव-भाव और गतिविधियाँ इन दोनों कार्यों में सहायक होती हैं। दृश्य को केवल सुंदर सजावट कहना अधूरा होगा, क्योंकि वह नाटक की घटना और अर्थ को भी सामने लाता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर नाटक में दृश्य घटनाओं और पात्रों की गतिविधियों को प्रत्यक्ष बनाकर कथानक को आगे बढ़ाता है। साथ ही, मंच-सज्जा, हाव-भाव और अभिनय द्वारा पात्रों की मनःस्थिति तथा वातावरण को स्पष्ट करके दर्शकों पर गहरा प्रभाव डालता है।

चरण 3: निष्कर्ष दृश्य कथानक को आगे बढ़ाने और पात्रों की मनःस्थिति तथा वातावरण को प्रभावपूर्ण बनाने में महत्त्वपूर्ण है।

त्वरित सुझाव: दो बिंदुओं को अलग रखें: दृश्य क्या घटित करता है और दर्शक तक कौन-सा भाव पहुँचाता है।

अथवा

8(i)(b). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

रेडियो नाटक के संवाद में पात्रों का नाम लेना क्यों आवश्यक होता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता पात्रों को देख नहीं सकता।
- रेडियो नाटक में संवाद और ध्वनि संकेत पात्रों तथा घटनाओं की पहचान कराते हैं।

चरण 1: माध्यम की सीमा समझना रंगमंच पर दर्शक पात्र को उसके चेहरे, वेशभूषा और गतिविधि से पहचान लेता है। रेडियो में ये दृश्य संकेत उपलब्ध नहीं होते। इसलिए संवादों में प्रसंगानुकूल नाम लेने से श्रोता को पता चलता है कि कौन किससे बात कर रहा है। नामों का प्रयोग स्वाभाविक संबोधन के रूप में हो, ताकि बातचीत कृत्रिम न लगे।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक में पात्र दिखाई नहीं देते; श्रोता केवल आवाजें सुनते हैं। इसलिए संवादों में स्वाभाविक ढंग से पात्रों के नाम लेना आवश्यक है। इससे वक्ता और संबोधित पात्र की पहचान स्पष्ट होती है तथा श्रोता कथानक को बिना भ्रम समझ पाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पात्रों के नाम श्रोता को वक्ता और संबोधित व्यक्ति पहचानने में सहायता देते हैं, जिससे कथा स्पष्ट रहती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को रेडियो की श्रव्य प्रकृति से शुरू करें और पहचान तथा भ्रम दूर होने का कारण बताएँ।

8(ii)(a). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

लेखन का तात्पर्य बताते हुए स्पष्ट कीजिए कि इसे यांत्रिक हस्तकौशल क्यों नहीं माना जाता। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखन विचारों, अनुभवों और भावनाओं को भाषा में व्यवस्थित करके दूसरों तक पहुँचाने की सृजनात्मक प्रक्रिया है।
- यांत्रिक हस्तकौशल में अभ्यास से एक जैसी क्रिया दोहराई जाती है; लेखन में चिंतन, कल्पना, संवेदना तथा भाषा का विवेकपूर्ण चयन आवश्यक है।

चरण 1: लेखन और अक्षर बनाने का अंतर समझें कागज पर अक्षर उतार देना ही लेखन नहीं है। लेखक पहले विषय को समझता है, विचारों को चुनता है और फिर उद्देश्य तथा पाठक के अनुसार उन्हें क्रम देता है। इसलिए सुंदर लिखावट और सार्थक लेखन अलग क्षमताएँ हैं।

चरण 2: यांत्रिकता से भिन्नता स्पष्ट करें लेखक को हर विषय के लिए अनुभव, दृष्टि और अभिव्यक्ति के नए निर्णय लेने होते हैं। शब्दों का चयन, तर्कों की संगति और रचना का संशोधन मानसिक सक्रियता माँगते हैं। केवल हाथ की गति का अभ्यास इन निर्णयों का विकल्प नहीं बन सकता।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लेखन विचारों, भावों और अनुभवों को भाषा में सुसंगठित रूप देने की सृजनात्मक प्रक्रिया है। यह यांत्रिक हस्तकौशल नहीं है, क्योंकि इसमें चिंतन, कल्पना, संवेदना, मौलिक दृष्टि तथा उद्देश्य और पाठक के अनुरूप शब्दों के विवेकपूर्ण चयन की आवश्यकता होती है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखन की पहचान सार्थक, विचारपूर्ण और सृजनात्मक अभिव्यक्ति है; केवल अक्षर बनाने का अभ्यास उसे पूरा नहीं करता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले लेखन का अर्थ दें, फिर चिंतन और शब्द-चयन के आधार पर उसे यांत्रिक कार्य से अलग करें।

अथवा

8(ii)(b). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

समाचार लिखने की कौन-सी प्रचलित शैली है और समाचार लेखन में किन बातों का ध्यान रखा जाता है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार की सबसे प्रचलित शैली उल्टा पिरामिड शैली है; इसमें तथ्य घटते महत्त्व के क्रम में रखे जाते हैं।
- समाचार का आधार सत्यापित तथ्य हैं। भाषा सरल, स्पष्ट और संक्षिप्त हो तथा लेखक की निजी राय तथ्य के रूप में प्रस्तुत न की जाए।

चरण 1: प्रचलित शैली का क्रम पहचानें उल्टा पिरामिड शैली में सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना आमुख में आती है। उसके बाद मुख्य विवरण और अंत में अपेक्षाकृत कम महत्त्व की पृष्ठभूमि दी जाती है। पाठक को आरंभ में ही घटना का सार मिल जाता है।

चरण 2: समाचार की आवश्यक सावधानियाँ बताएँ क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे से संबंधित प्रासंगिक जानकारी जाँची जाती है। नाम, स्थान और आँकड़े सही होने चाहिए। निष्पक्षता तथा तथ्यपरकता बनाए रखते हुए अनावश्यक विस्तार और कठिन भाषा से बचना चाहिए। अपुष्ट बात को निश्चित तथ्य की तरह नहीं लिखना चाहिए।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर समाचार लेखन की प्रचलित शैली उल्टा पिरामिड है। इसमें प्रमुख तथ्य पहले और अन्य विवरण घटते महत्त्व में आते हैं। लेखन में तथ्य की शुद्धता, निष्पक्षता, स्पष्टता, संक्षिप्तता तथा क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे की प्रासंगिक जानकारी का ध्यान रखा जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखा जाता है; उसकी विश्वसनीयता सही तथ्यों और निष्पक्ष, स्पष्ट प्रस्तुति पर निर्भर

करती है।

त्वरित सुझाव: आमुख को सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना से जोड़ें और समाचार की सावधानियों में सत्यता, निष्पक्षता तथा छह ककार याद रखें।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
भारत में पहला छापाखाना कब, कहाँ और किस उद्देश्य से खोला गया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भारत में पहला छापाखाना 1556 ई. में गोवा में स्थापित हुआ था। यह मुद्रित माध्यम के भारतीय इतिहास का प्रारंभिक पड़ाव है।
- पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों ने इसे धार्मिक प्रचार और ईसाई धर्म से संबंधित साहित्य छापने के उद्देश्य से स्थापित किया था।

चरण 1: समय और स्थान अलग पहचानें प्रश्न में कब और कहाँ दोनों पूछे गए हैं। इसलिए उत्तर में 1556 ई. और गोवा स्पष्ट लिखना आवश्यक है। केवल यह कहना कि छापाखाना पुर्तगालियों के समय आया, प्रश्न की समय-संबंधी माँग पूरी नहीं करता।

चरण 2: स्थापना का उद्देश्य समझाएँ प्रारंभिक छापाखाने की स्थापना ईसाई मिशनरियों के धार्मिक कार्य से जुड़ी थी। धार्मिक उपदेशों और पुस्तकों की अनेक प्रतियाँ तैयार करके उन्हें लोगों तक पहुँचाना इसका प्रमुख उद्देश्य था। इसे आधुनिक दैनिक समाचार-पत्र निकालने की योजना के साथ नहीं मिलाना चाहिए। छापाखाना एक मुद्रण-साधन है, जबकि समाचार-पत्र उसका एक विशिष्ट उपयोग है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर भारत का पहला छापाखाना 1556 ई. में गोवा में स्थापित हुआ था। इसे पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों ने स्थापित किया। इसका मुख्य उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना और धार्मिक पुस्तकों तथा प्रचार-सामग्री को छापकर लोगों तक पहुँचाना था। इस प्रकार भारत में छपाई का आरंभ धार्मिक साहित्य के प्रकाशन से जुड़ा था, आधुनिक दैनिक समाचार-पत्रों के प्रकाशन से नहीं।

चरण 4: निष्कर्ष पहला भारतीय छापाखाना: 1556 ई., गोवा; स्थापना का प्रमुख उद्देश्य ईसाई धर्म के प्रचार के लिए धार्मिक साहित्य छापना था।

त्वरित सुझाव: तथ्य को तीन खानों में याद करें: कब—1556 ई.; कहाँ—गोवा; क्यों—ईसाई धर्म का प्रचार।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं और अंशकालिक पत्रकार किन्हें कहते हैं तथा इन्हें अन्य किस नाम से जाना जाता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों के प्रमुख प्रकार पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र पत्रकार हैं। यह वर्गीकरण उनके कार्य-संबंध और काम करने की व्यवस्था पर आधारित है।
- अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार-संगठन के लिए निश्चित मानदेय पर सीमित रूप से काम करते हैं; इन्हें स्ट्रिंगर कहा जाता है।

चरण 1: तीनों प्रकार बताएँ पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार-संगठन में नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है। अंशकालिक पत्रकार उसी प्रकार नियमित पूर्णकालिक कर्मचारी के रूप में नियुक्त नहीं होता। स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संगठन से बँधे बिना अलग-अलग प्रकाशनों या संस्थानों के लिए लिख सकता है। इन तीनों श्रेणियों को अलग नाम देना प्रश्न के पहले भाग का उत्तर है।

चरण 2: अंशकालिक पत्रकार की पहचान स्पष्ट करें अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार-संगठन के लिए निश्चित मानदेय के आधार पर समाचार भेजता है। उसे स्ट्रिंगर भी कहते हैं। अंशकालिक होने का अर्थ यह नहीं कि उसके समाचार में सत्यापन या उत्तरदायित्व कम होगा। यहाँ उसकी पहचान रोजगार की व्यवस्था से होती है। स्वतंत्र पत्रकार का नाम देकर अंशकालिक पत्रकार की परिभाषा पूरी नहीं की जा सकती।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर पत्रकार मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं—पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र पत्रकार। पूर्णकालिक पत्रकार समाचार-संगठन के नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होते हैं। अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार-संगठन के लिए निश्चित मानदेय पर काम करते और समाचार भेजते हैं। इन्हें स्ट्रिंगर भी कहा जाता है। स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संस्था से बँधे बिना विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं या समाचार-संगठनों के लिए लेखन करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष पत्रकारों के तीन प्रमुख प्रकार हैं। निश्चित मानदेय पर किसी संगठन के लिए काम करने वाले अंशकालिक पत्रकार स्ट्रिंगर कहलाते हैं।

त्वरित सुझाव: तीन प्रकार लिखने के बाद अंशकालिक के सामने निश्चित मानदेय और स्ट्रिंगर अवश्य लिखें; उसे स्वतंत्र पत्रकार न कहें।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
विशेष लेखन क्या है और यह क्यों किया जाता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेष लेखन सामान्य समाचार से आगे जाकर किसी निश्चित विषय या क्षेत्र की गहन और तथ्यपूर्ण जानकारी प्रस्तुत करता है।
- विषय का ज्ञान, शोध, विशेषज्ञों से बातचीत और उपयुक्त पारिभाषिक शब्दावली इसकी विश्वसनीयता बनाते हैं।

चरण 1: अर्थ और स्वरूप समझिए खेल, अर्थव्यवस्था, विज्ञान, स्वास्थ्य और कृषि जैसे क्षेत्रों की अलग प्रकृति और शब्दावली होती है। इनकी घटनाओं को ठीक से समझाने के लिए लेखक को उस क्षेत्र का विशेष ज्ञान चाहिए। विशेष लेखन में तथ्य बताने के साथ उनकी पृष्ठभूमि, कारण और प्रभाव भी स्पष्ट किए जाते हैं। केवल किसी प्रसिद्ध व्यक्ति पर लिखना या समाचार को लंबा कर देना विशेष लेखन नहीं है। सामान्य समाचार घटना की तात्कालिक सूचना देता है, जबकि विशेष लेखन उस क्षेत्र के संदर्भ समझाकर पाठक की समझ बढ़ाता है। इसलिए भाषा सरल रखते हुए तथ्यों की शुद्धता बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 2: उद्देश्य सहित आदर्श उत्तर विशेष लेखन किसी निश्चित विषय या क्षेत्र, जैसे विज्ञान, खेल, अर्थव्यवस्था अथवा स्वास्थ्य, का गहन अध्ययन करके किया जाने वाला तथ्यपरक लेखन है। इसमें विषय का विशेष ज्ञान, शोध तथा विशेषज्ञों की सहायता आवश्यक होती है। यह पाठकों की विशिष्ट रुचियों और सूचना-संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने, जटिल विषयों को सरल ढंग से समझाने तथा उनके विभिन्न पक्षों का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष विशेष लेखन का आधार विषयगत विशेषज्ञता है और उसका उद्देश्य पाठक को उपयोगी, स्पष्ट तथा गहरी जानकारी देना है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में परिभाषा के बाद दो उदाहरण और पाठकों की विशिष्ट सूचना-आवश्यकता का उल्लेख अवश्य करें।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
भादों के बीत जाने पर प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने 'पतंग' कविता में दिखाया है उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता में भादों के बाद प्रकृति का परिवर्तन बच्चों के पतंग उड़ाने के उत्साह की पृष्ठभूमि बनता है।
- रंग, प्रकाश, वायु और आकाश के बिंब वर्षा के बाद आने वाली शरद की ताजगी व्यक्त करते हैं।

चरण 1: प्राकृतिक बिंब पहचानिए भादों की वर्षा बीतने पर शरद की चमकीली सुबह आती है। कवि उसका स्वागत खरगोश की आँखों जैसी लाल सुबह के बिंब से करता है। नई धूप, साफ आकाश और तेज हवा वातावरण में खुलापन तथा गति भरते हैं। कविता के बाल-जगत में यही परिवर्तन पतंगबाजी की अनुकूल ऋतु बन जाता है; इसलिए उत्तर को प्रकृति के इन ठोस परिवर्तनों पर केंद्रित रखना चाहिए। यहाँ

ऋतु परिवर्तन केवल कैलेंडर का बदलाव नहीं है। वर्षा के बाद खुला आकाश बच्चों की कल्पना और खेल के लिए अवसर देता है। सुबह की लालिमा तथा उजली धूप दृश्य में चमक लाती हैं, जबकि हवा पतंगों को ऊँचाई देने में सहायक है। इस प्रकार दृश्य और बाल-उत्साह परस्पर जुड़े हैं।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर भादों की वर्षा बीतने पर शरद ऋतु आती है। सुबह खरगोश की आँखों जैसी लाल और चमकीली दिखाई देती है। नई, उजली धूप से वातावरण निखर उठता है। आकाश साफ और विस्तृत हो जाता है तथा तेज हवा चलने लगती है। रंग और प्रकाश से भरा यह नया वातावरण बच्चों को पतंग उड़ाने के लिए आमंत्रित करता है। प्रकृति ताजगी और उत्साह से भर जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष भादों के बाद लालिमा भरी सुबह, नई धूप, स्वच्छ आकाश और तेज हवा शरद के आगमन को सजीव बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रकृति-वर्णन में सुबह, धूप, आकाश और हवा के चार बिंब लिखकर उन्हें पतंगबाजी के उत्साह से जोड़ें।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'बादल राग' कविता से उद्धृत निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :
'तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया' [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल परिवर्तन और क्रांति का प्रतीक है; उसकी छाया सामाजिक जीवन के द्वंद्व भी उभारती है।
- अस्थिर सुख क्षणभंगुर वैभव का संकेत करता है, जिस पर दुख की आशंका सदा बनी रहती है।

चरण 1: बिंब और भाव का संबंध समझिए समीर-सागर का अर्थ समुद्र की तरह फैला वायुमंडल है, जिसमें बादलों की छाया तैरती दिखाई देती है। कवि इस प्राकृतिक दृश्य को मानव जीवन के अनुभव से जोड़ता है। जैसे बादल की छाया फैलती है, वैसे ही चंचल सुख पर दुख की आशंका छाई रहती है। यहाँ सुख को स्थायी या सभी लोगों के लिए समान मानना गलत होगा; कविता आगे संपन्न वर्ग के भय और पीड़ित जन की आशा का अंतर उभारती है। सुख के साथ दुख की छाया कहने से जीवन का विरोधाभास सामने आता है। संपत्ति होने पर भी उसके छिन जाने का भय मनुष्य को निश्चिंत नहीं रहने देता। अत: पंक्तियों का आशय केवल वर्षा से होने वाली असुविधा नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन में सुख की अस्थिरता है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आशय इन पंक्तियों में वायु के विशाल सागर पर तैरती बादलों की छाया का चित्र है। कवि इसके माध्यम से बताता है कि संसार का सुख स्थायी नहीं है; उस पर दुख की छाया सदा बनी रहती है। धन और वैभव का सुख भोगने वाले भी उसे खोने की आशंका से भयभीत रहते हैं। बादल की क्रांतिकारी उपस्थिति इस अस्थिर सुख को चुनौती देती है।

चरण 3: निष्कर्ष प्राकृतिक छाया का बिंब सांसारिक सुख की क्षणभंगुरता और उसके भीतर छिपे दुख तथा भय को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: पहले समीर-सागर का सरल अर्थ लिखें, फिर अस्थिर सुख और दुख की छाया को मानवीय जीवन से जोड़ें।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
तुलसी ने 'कवितावली' के छंदों में तत्कालीन आर्थिक विषमताओं का स्वाभाविक चित्रण किया है। सिद्ध कीजिए कि तुलसी युग चितेरे कवि थे। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास के छंद अपने समय की आजीविका-संबंधी कठिनाइयों और सामाजिक विषमता का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं।

- अलग-अलग वर्गों की रोजी छिनने और पेट की आग से विवश होने का चित्रण कवि को युग का चितेरा सिद्ध करता है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण जुटाइए किसान के पास खेती, भिखारी के पास भीख, व्यापारी के पास व्यापार और सेवक के पास नौकरी न रहने का वर्णन व्यापक आर्थिक संकट दिखाता है। लोग जीविका के अभाव में एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें। दूसरे छंद में पेट की आग बुझाने के लिए ऊँचे-नीचे कर्म करने और संतान तक बेचने की विवशता आती है। ये स्थितियाँ जनसाधारण की पीड़ा तथा व्यवस्था की विषमता के ठोस प्रमाण हैं। कवि की दृष्टि किसी एक व्यक्ति के निजी दुख तक सीमित नहीं है। अनेक पेशों का एक साथ उल्लेख संकट की व्यापकता बताता है। इसी सामाजिक विस्तार के कारण यह चित्र युग का प्रतिनिधि बनता है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर तुलसीदास ने किसान की खेती, व्यापारी के व्यापार, भिखारी की भीख और सेवक की नौकरी छिन जाने का चित्र प्रस्तुत किया है। जीविकाविहीन लोग निराश होकर भटक रहे हैं। पेट की आग बुझाने के लिए मनुष्य उचित-अनुचित कर्म करता और संतान तक बेचने को विवश होता है। आर्थिक विषमता, बेरोजगारी और भूख का ऐसा स्वाभाविक चित्रण तुलसी को अपने युग का सच्चा चितेरा सिद्ध करता है।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसी ने विभिन्न वर्गों की आजीविका के संकट और भूख से उत्पन्न विवशता द्वारा तत्कालीन समाज का प्रामाणिक चित्र खींचा है।

त्वरित सुझाव: युग-चितेरा सिद्ध करते समय केवल प्रशंसा न करें; खेती, व्यापार, नौकरी और पेट की आग के पाठगत प्रमाण दें।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : 'हो जाए न पथ में रात कहीं' – इस काव्य पंक्ति में कवि ने किस पथ की ओर संकेत किया है ? कवि ने 'रात' शब्द का प्रयोग करके कौन-सी आशंका व्यक्त की है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन की कविता में पथिक का घर लौटना जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ने का प्रतीक है।
- रात का वास्तविक अर्थ अँधेरा है; लाक्षणिक अर्थ जीवन का अंत अथवा लक्ष्य प्राप्ति का अवसर समाप्त होना है।

चरण 1: पथ का संकेत समझें पंक्ति में पथिक दिन ढलने से पहले अपने गंतव्य पर पहुँचना चाहता है। इस दृश्य के माध्यम से कवि जीवन के उस पथ की ओर संकेत करता है जिस पर मनुष्य अपने लक्ष्य और प्रियजनों तक पहुँचने के लिए आगे बढ़ता है। यहाँ पथ को केवल कोई निश्चित सड़क मानना भावार्थ को सीमित कर देगा।

चरण 2: रात की आशंका स्पष्ट करें दिन जल्दी ढलने की अनुभूति समय की कमी का बोध कराती है। कवि को आशंका है कि मंजिल पाने से पहले ही अँधेरा न छा जाए। प्रतीकात्मक रूप में यह जीवन समाप्त होने या लक्ष्य पाने का अवसर निकल जाने का भय है, इसलिए पथिक अपने कदम तेज करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने जीवन के उस पथ की ओर संकेत किया है जो मनुष्य को उसके लक्ष्य तक ले जाता है। 'रात' से आशंका है कि लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही जीवन समाप्त न हो जाए अथवा अवसर हाथ से निकल न जाए।

त्वरित सुझाव: पथ का अर्थ जीवन का मार्ग और रात का अर्थ लक्ष्य से पहले जीवन या अवसर का अंत लिखकर दोनों प्रश्नों का अलग उत्तर दें।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : 'बात सीधी थी पर' कविता में भाषा के विषय में व्यंग्य करके कवि क्या सिद्ध करना चाहता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता भाषा और कथ्य के संबंध पर विचार करती है।
- कविता में सहज संप्रेषण के स्थान पर कृत्रिम भाषायी चमत्कार को महत्त्व देने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य है।

चरण 1: व्यंग्य का लक्ष्य पहचानें कवि के पास कहने को सीधी बात थी, पर वह उसे भाषा के चक्कर में उलझा देता है। बात को प्रभावशाली बनाने के लिए अनावश्यक सजावट और शब्दों की पेचीदगी बढ़ाने पर उसका सहज अर्थ नष्ट होने लगता है। इस स्थिति में भाषा अभिव्यक्ति का साधन होने के बजाय बाधा बन जाती है।

चरण 2: कवि का उद्देश्य स्पष्ट करें कवि सिद्ध करना चाहता है कि भाषा की सफलता कथ्य को पाठक तक सहजता से पहुँचाने में है। केवल कठिन शब्दों और दिखावटी प्रयोगों से अच्छी कविता नहीं बनती। बात और भाषा के बीच स्वाभाविक तालमेल आवश्यक है; सहज और उपयुक्त शब्द भाव को अधिक प्रभावी बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि भाषा की कृत्रिम जटिलता और अनावश्यक शब्दाडंबर पर व्यंग्य करता है। वह सिद्ध करना चाहता है कि भाषा भावों के सहज संप्रेषण का साधन है। भाषायी चमत्कार के मोह में सीधी बात को उलझाने से उसकी स्वाभाविकता और प्रभाव नष्ट हो जाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शब्दाडंबर की आलोचना और सहज संप्रेषण की आवश्यकता दोनों लिखें; केवल कठिन भाषा को दोष देना पर्याप्त नहीं है।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : 'आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है' पंक्ति में कौन ज़िदयाया है ? कवि ने 'ठुनक' शब्द द्वारा बाल-मनोविज्ञान के किस पक्ष का वर्णन किया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ गोरखपुरी की रुबाई में बालक की सहज चेष्टाओं और माँ के वात्सल्य का चित्रण है।
- ठुनकना बालक की रूठने, मचलने और अपनी इच्छा पूरी करवाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति व्यक्त करता है।

चरण 1: ज़िद करने वाले को पहचानें आँगन में माँ का छोटा बच्चा ज़िद कर रहा है। आकाश में चमकते चाँद को देखकर वह उसी को लेने की माँग करता है। उसे वास्तविक चाँद और हाथ में ली जा सकने वाली वस्तु के बीच का अंतर समझ में नहीं आता। उसकी माँग उसके भोलेपन को प्रकट करती है।

चरण 2: ठुनक शब्द का मनोवैज्ञानिक आशय समझें ठुनक शब्द में बच्चे के मचलने और रूठकर अपनी बात मनवाने का भाव है। बालक किसी आकर्षक वस्तु को देखकर तत्काल उसे पा लेना चाहता है। माँ दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर उसकी इच्छा को संतुष्ट करती है। यह प्रसंग बालसुलभ हठ और माँ की सूझबूझ को सजीव बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष आँगन में छोटा बच्चा चाँद लेने के लिए ज़िदयाया है। 'ठुनक' शब्द से उसके रूठने, मचलने और अपनी इच्छा मनवाने की प्रवृत्ति व्यक्त हुई है। कवि ने आकर्षक वस्तु को तुरंत पाने की बालसुलभ हठधर्मिता और भोलेपन का चित्रण किया है।

त्वरित सुझाव: पहले बच्चे और उसकी चाँद लेने की माँग का उल्लेख करें, फिर ठुनकने को रूठकर अपनी इच्छा मनवाने से जोड़ें।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : लछमिन (भक्तिन) के लिए अप्रत्याशित अनुग्रह क्या था ? लछमिन पर उसका क्या प्रभाव पड़ा ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र में भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन है। उसके जीवन का यह प्रसंग पिता के निधन और मायके की यात्रा से जुड़ा है।
- अप्रत्याशित अनुग्रह का अर्थ ऐसा उपकार या कृपापूर्ण व्यवहार है जिसकी पहले से कोई आशा न रही हो।

चरण 1: सास के व्यवहार का संदर्भ दें लछमिन की विमाता ने उसके पिता के मरणांतक रोग का समाचार इतनी देर से भेजा कि वह मृत्यु की सूचना बन चुका था। सास ने भी रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए उससे पिता के निधन की बात छिपाई। उसने केवल इतना कहा कि बहुत दिनों से मायके नहीं गई हो, जाकर देख आओ।

चरण 2: अनुग्रह और तत्काल प्रभाव बताएँ सास का उसे पहना-ओढ़ाकर स्वयं मायके भेजना लछमिन के लिए अप्रत्याशित अनुग्रह था। वह इस तरह की अनुमति और कृपा की आशा नहीं करती थी। पिता और मायकेवालों से मिलने की प्रसन्नता ने उसे अत्यंत उत्साहित कर दिया। उसके पैरों में पंख लगने का आशय इसी उत्सुकता और जल्दी पहुँचने की आकुलता से है।

चरण 3: मायके पहुँचने पर परिवर्तन समझें गाँव की सीमा पर लोगों की सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियों और बातों ने उसकी प्रसन्नता को आशंका में बदल दिया। घर पहुँचकर पिता की मृत्यु तथा विमाता की उपेक्षा का सामना करने पर वह दुख और अपमान से भर गई। इस प्रकार प्रारंभ का उल्लास टिक न सका और वह पानी पिए बिना ससुराल लौट पड़ी।

चरण 4: निष्कर्ष सास का लछमिन को पहना-ओढ़ाकर मायके जाने की अनुमति देना उसके लिए अप्रत्याशित अनुग्रह था। पिता से मिलने की खुशी में उसके पैरों में मानो पंख लग गए और वह उत्साह से चल पड़ी। पर गाँव पहुँचते ही लोगों की सहानुभूति से उसका उत्साह बुझ गया। पिता की मृत्यु और विमाता की उपेक्षा ने उसे दुख तथा अपमान से भर दिया।

त्वरित सुझाव: अनुग्रह में सास का पहना-ओढ़ाकर मायके भेजना लिखें और प्रभाव में पहले उत्साह, फिर गाँव पहुँचने पर दुख का क्रम स्पष्ट करें।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : 'बाज़ार दर्शन' पाठ के संदर्भ में 'पैसे की व्यंग्य शक्ति' का आशय स्पष्ट करते हुए लिखिए कि सर्वसाधारण पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है और कैसे लोग इससे अप्रभावित रहते हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धन की व्यंग्य शक्ति का संबंध मनुष्य में अभाव, हीनता और ईर्ष्या का अनुभव उत्पन्न करने से है।
- आवश्यकताओं की स्पष्ट पहचान और मन का संतोष बाज़ार के आकर्षण से बचाते हैं।

चरण 1: आशय और सामान्य प्रभाव समझें पैसा अपनी क्रयशक्ति और उससे प्राप्त वस्तुओं के प्रदर्शन द्वारा निर्धन अथवा असंतुष्ट व्यक्ति को उसकी सीमाओं का बोध कराता है। वह दूसरों की संपन्नता देखकर अपने जीवन को अधूरा मानने लगता है। यहाँ व्यंग्य का अर्थ केवल कोई कटु वाक्य कहना नहीं, बल्कि संपन्नता का ऐसा प्रभाव है जो अभावग्रस्त व्यक्ति को भीतर से चोट पहुँचाता है।

चरण 2: अप्रभावित रहने वालों को पहचानें जिनकी इच्छाएँ अनियंत्रित हैं, वे इस प्रभाव में आकर अनावश्यक खरीद और प्रतिस्पर्धा में फँसते हैं। इसके विपरीत भगत जी जैसे संतुष्ट लोग अपनी जरूरत पहचानते हैं। वे अधिक कमाने और दिखावे की वस्तुएँ जुटाने की लालसा से मुक्त रहते हैं। इसलिए पैसे की चमक उनके आत्मसम्मान और मन की शांति को प्रभावित नहीं करती।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर पैसे की व्यंग्य शक्ति उसकी वह क्षमता है जो अपनी चमक से मनुष्य को उसके अभावों का तीखा बोध कराती है। सामान्य व्यक्ति दूसरों की संपन्नता देखकर हीनता, ईर्ष्या और असंतोष से भर जाता है। किंतु भगत जी जैसे संतुष्ट लोग, जिनकी आवश्यकताएँ सीमित और स्पष्ट हैं तथा मन में धन का लोभ नहीं है, इससे अप्रभावित रहते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष धन का प्रदर्शन असंतुष्ट व्यक्ति को चोट पहुँचाता है; संतोष और आवश्यकता का विवेक इससे बचाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पैसे की चमक, अभाव-बोध और भगत जी के संतोष को क्रम से जोड़िए।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर लिखिए कि जाति और श्रम-विभाजन में बुनियादी अंतर क्या है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वाभाविक श्रम-विभाजन व्यक्ति की योग्यता, रुचि और सामाजिक आवश्यकता पर आधारित होता है।
- जाति-प्रथा जन्म के आधार पर श्रमिकों का स्थायी और ऊँच-नीच वाला विभाजन करती है।

चरण 1: विभाजन के आधार की तुलना करें समाज में अलग-अलग कार्यों का बँटवारा आवश्यक है, परंतु काम का चुनाव व्यक्ति की क्षमता, प्रशिक्षण और रुचि के अनुकूल होना चाहिए। जाति-प्रथा इन आधारों की उपेक्षा करके जन्म से ही व्यक्ति का पेशा निर्धारित कर देती है। इस प्रकार वह केवल कार्यों का विभाजन नहीं करती, बल्कि काम करने वाले मनुष्यों को भी अलग-अलग बंद वर्गों में बाँटती है।

चरण 2: स्वतंत्रता और परिणाम का अंतर स्पष्ट करें स्वाभाविक श्रम-विभाजन में व्यक्ति बदलती परिस्थितियों के अनुसार व्यवसाय बदल सकता है। जाति-प्रथा व्यवसाय परिवर्तन रोककर अरुचिकर काम करने को बाध्य करती है। उसमें पेशों और उनसे जुड़े व्यक्तियों को ऊँचा-नीचा माना जाता है। इससे प्रतिभा का उपयोग बाधित होता है, श्रम के प्रति सम्मान घटता है और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर श्रम-विभाजन में कार्यों का बँटवारा व्यक्ति की योग्यता, रुचि और समाज की आवश्यकता के अनुसार होता है। इसके विपरीत जाति-प्रथा जन्म के आधार पर श्रमिकों को ऊँचे-नीचे वर्गों में बाँटती है और उनका पेशा पहले से तय कर देती है। इसमें व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता नहीं होती। इसलिए यह स्वाभाविक श्रम-विभाजन के बजाय श्रमिकों का कठोर और असमान विभाजन है।

चरण 4: निष्कर्ष बुनियादी अंतर कार्यों के लचीले विभाजन और जन्माधारित, श्रेणीबद्ध श्रमिक-विभाजन का है।

त्वरित सुझाव: तुलना के लिए आधार, ऊँच-नीच और व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता अवश्य लिखिए।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : 'काले मेघा पानी दे' पाठ में जीजी ने दान के पक्ष में जो तर्क दिए हैं, उनका उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी दान को त्याग और सामूहिक कल्याण की भावना से जोड़ती हैं।
- बीज बोने का उदाहरण थोड़े त्याग से अधिक प्राप्ति का तर्क स्पष्ट करता है।

चरण 1: जीजी का तर्क समझें जीजी के अनुसार दान वही है जिसमें मनुष्य अपने पास की प्रिय और आवश्यक वस्तु का कुछ अंश दूसरों के लिए छोड़ता है। पानी की कमी के समय पानी देना इसी कारण सार्थक त्याग है। वे इसे वर्षा की प्रार्थना और सबके हित की भावना से जोड़ती हैं। उत्तर में इन बातों को जीजी की मान्यता के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। उनका आग्रह निजी संचय से अधिक सामूहिक हित पर है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर जीजी के अनुसार बिना त्याग के दान नहीं होता। पानी की कमी में पानी देना सच्चा दान है। जैसे किसान थोड़ा बीज बोकर भरपूर फसल पाता है, वैसे ही इंद्र को थोड़ा पानी देने से वर्षा के रूप में अधिक पानी मिलने की आशा है।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी दान को वास्तविक त्याग और बीज की तरह बढ़कर लौटने वाले लोककल्याणकारी कर्म के रूप में समझाती हैं।

त्वरित सुझाव: पानी की कमी में त्याग और किसान के बीज का उदाहरण साथ लिखकर तर्क पूरा कीजिए।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर बताइए कि आज गाँव में अखाड़े समाप्त होने के क्या कारण हो सकते हैं। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में राजकीय संरक्षण समाप्त होने पर लोककला और पहलवानी की दुर्दशा सामने आती है।
- वर्तमान परिस्थितियों के संभावित कारणों को पाठ के संरक्षण और आजीविका संबंधी संकेतों से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: पाठ से वर्तमान का संबंध जोड़ें लुट्टन की पहलवानी को आश्रय और प्रोत्साहन मिलने पर प्रतिष्ठा मिली, लेकिन संरक्षण हटने पर उसकी स्थिति बिगड़ गई। इससे स्पष्ट होता है कि अखाड़ों के संचालन के लिए केवल उत्साह पर्याप्त नहीं है; स्थान, साधन, प्रशिक्षण और आर्थिक सहयोग भी आवश्यक हैं। प्रश्न संभावित वर्तमान कारण पूछता है, इसलिए पाठ के इसी संकेत को आज के संदर्भ में विस्तार देना उचित है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर गाँवों में अखाड़े समाप्त होने के कारण आर्थिक संरक्षण और प्रशिक्षण-सुविधाओं की कमी, युवाओं का रोजगार के लिए पलायन तथा परंपरागत खेलों के प्रति घटती रुचि हो सकते हैं। पाठ में लुट्टन का संरक्षण छिनना भी पहलवानी की असुरक्षित स्थिति को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष संरक्षण का अभाव, आजीविका की कठिनाइयाँ और युवाओं की घटती भागीदारी अखाड़ों के क्षय के संभावित कारण हैं।

त्वरित सुझाव: आज के कारण लिखते समय लुट्टन के संरक्षण छिनने का प्रसंग आधार बनाइए।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : शिरीष के पुष्पों की तुलना लेखक ने किनके साथ और किस आधार पर की है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक शिरीष के माध्यम से विपरीत परिस्थितियों में भी आनंदपूर्ण और निर्लिप्त रहने की जीवन-दृष्टि समझाते हैं।
- कबीर और कालिदास से तुलना बाहरी रूप की नहीं, उनके स्वभाव और रचनात्मकता की है।

चरण 1: तुलना का संदर्भ समझें प्रचंड गरमी और उमस में भी शिरीष फूलता रहता है। प्रतिकूल वातावरण उसकी सरसता नहीं छीन पाता। इसी आधार पर लेखक उसमें अवधूत जैसी मस्ती और अनासक्ति देखते हैं।

चरण 2: समान गुण स्पष्ट करें कबीर की बेपरवाही, मस्ती और सरसता शिरीष से मिलती है। कालिदास का निर्मल, उन्मुक्त और अनासक्त कवि-हृदय भी ऐसी ही सृजनशीलता का परिचायक है। लेखक के लिए शिरीष के फूल और मेघदूत जैसी रचना इसी निर्लिप्त आनंद से उपजते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक ने शिरीष की तुलना कबीर और कालिदास जैसे अनासक्त, फक्कड़ रचनाकारों से की है। कबीर की मस्ती, बेपरवाही और सरसता तथा कालिदास के निर्मल, उन्मुक्त हृदय की सृजनशीलता शिरीष के विपरीत परिस्थितियों में भी सरस पुष्प देते रहने जैसी है।

त्वरित सुझाव: तुलना लिखते समय नामों के साथ मस्ती, सरसता और अनासक्ति का आधार अवश्य जोड़ें।

14(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'सिल्वर वैडिंग' पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए कि यशोधर बाबू की पत्नी किन कारणों से समय के साथ बदल गई। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र में परिवर्तन समझने के लिए पारिवारिक अनुभव और बच्चों के प्रभाव को साथ देखना चाहिए।
- पत्नी मूल संस्कारों से आधुनिक नहीं थीं; उनका बदलना परिस्थितियों और मातृसुलभ लगाव से जुड़ा है।

चरण 1: पुराने अनुभव पहचानें विवाह के बाद संयुक्त परिवार में पत्नी को कठोर आचार-व्यवहार और जिठानियों के दबाव का सामना करना पड़ा। उन्हें शिकायत थी कि पति ने उनका पक्ष नहीं लिया। युवावस्था में ही उन पर बुढ़ापे जैसे बंधन लगाए गए थे।

चरण 2: बच्चों का प्रभाव समझें बच्चों का साथ देना उनके मातृसुलभ स्नेह का परिणाम था। बच्चों की आधुनिक रुचियों से जुड़कर वे नए पहनावे और रीति-रिवाज अपनाने लगीं। अतीत के बंधनों से मुक्त होकर जीवन जीने की इच्छा ने इस परिवर्तन को और बल दिया।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर बाबू की पत्नी बच्चों के प्रति मातृसुलभ स्नेह और उनका पक्ष लेने के कारण समय के साथ बदलीं। संयुक्त परिवार के कठोर बंधनों तथा पति द्वारा साथ न दिए जाने की शिकायत ने भी उन्हें आधुनिक जीवन-शैली अपनाने को प्रेरित किया।

त्वरित सुझाव: पत्नी के परिवर्तन में बच्चों का प्रभाव और संयुक्त परिवार के कटु अनुभव, दोनों कारण लिखें।

14(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'जूझ' पाठ के आधार पर बताइए कि बालक आनंद के पिता ने उसे किन शर्तों पर विद्यालय जाने की अनुमति प्रदान की। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद की पढ़ाई का संघर्ष खेती के श्रम और शिक्षा की इच्छा के बीच घटित होता है।
- पिता की अनुमति बिना शर्त नहीं थी; वे पढ़ाई से पहले खेती का काम पूरा कराना चाहते थे।

चरण 1: विद्यालय से पहले का काम बताएं आनंद को सवेरे खेत जाते समय बस्ता साथ ले जाना था। ग्यारह बजे पाठशाला जाने से पहले खेत में पानी लगाना था। इस प्रकार विद्यालय जाने की अनुमति मिलने पर भी सुबह की खेती की जिम्मेदारी उससे हटाई नहीं गई।

चरण 2: छुट्टी और अधिक काम की शर्त बताएं छुट्टी होने पर घर में बस्ता रखकर सीधे खेत आना और घंटा भर ढोर चराना था। जिस दिन खेत में अधिक काम होता, उस दिन पाठशाला नहीं जाना था। इन शर्तों से स्पष्ट होता है कि पिता खेती को पढ़ाई से अधिक प्राथमिकता देते थे।

चरण 3: निष्कर्ष पिता की शर्त थी कि आनंद ग्यारह बजे विद्यालय जाने से पहले खेत में पानी लगाए और बस्ता साथ ले जाए। छुट्टी के बाद बस्ता घर रखकर खेत आए तथा घंटा भर ढोर चराए। खेत में अधिक काम होने पर विद्यालय न जाए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सुबह का काम, छुट्टी के बाद का काम और अधिक काम वाले दिन की शर्त अलग पहचानें।

14(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

पुरातत्त्ववेत्ताओं ने किस भवन को 'कॉलेज ऑफ प्रीस्ट्स' कहा है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातत्त्ववेत्ता भवन की स्थिति और संरचना के आधार पर उसके संभावित उपयोग का अनुमान लगाते हैं।

- कॉलेज ऑफ प्रीस्ट्स का आशय पुरोहितों की ज्ञानशाला से है; यह नाम एक पुरातात्त्विक अनुमान को व्यक्त करता है।

चरण 1: भवन की स्थिति और बनावट बताएं मुअनजो-दड़ो में महाकुंड के उत्तर-पूर्व में एक लंबी इमारत के अवशेष हैं। इसके बीच में बड़ा खुला दालान और तीन ओर बरामदे हैं। बरामदों के साथ छोटे-छोटे कमरे रहे होंगे। इस संरचना को पुरोहितों की ज्ञानशाला से जोड़ा गया है।

चरण 2: नामकरण का आधार स्पष्ट करें पुरातत्त्व के जानकारों के अनुसार धार्मिक अनुष्ठानों से संबंधित स्थानों के साथ ज्ञानशालाएँ भी सटी होती थीं। महाकुंड के निकट इस भवन की स्थिति और उसका विन्यास इसी संभावना का संकेत देते हैं; इसलिए इसे कॉलेज ऑफ प्रीस्ट्स माना गया।

चरण 3: निष्कर्ष महाकुंड के उत्तर-पूर्व की लंबी इमारत को कॉलेज ऑफ प्रीस्ट्स कहा गया है। इसमें खुला दालान, तीन ओर बरामदे और कमरों के संकेत हैं। धार्मिक अनुष्ठान-स्थलों से ज्ञानशालाएँ जुड़ी होने की परंपरा के आधार पर इसे पुरोहितों की ज्ञानशाला माना गया।

त्वरित सुझाव: भवन की दिशा और बनावट बताने के बाद धार्मिक स्थल के पास ज्ञानशाला होने का कारण जोड़ें।